(अ.भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा का मुख पत्र)

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

(प्रगतिशील राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्र)
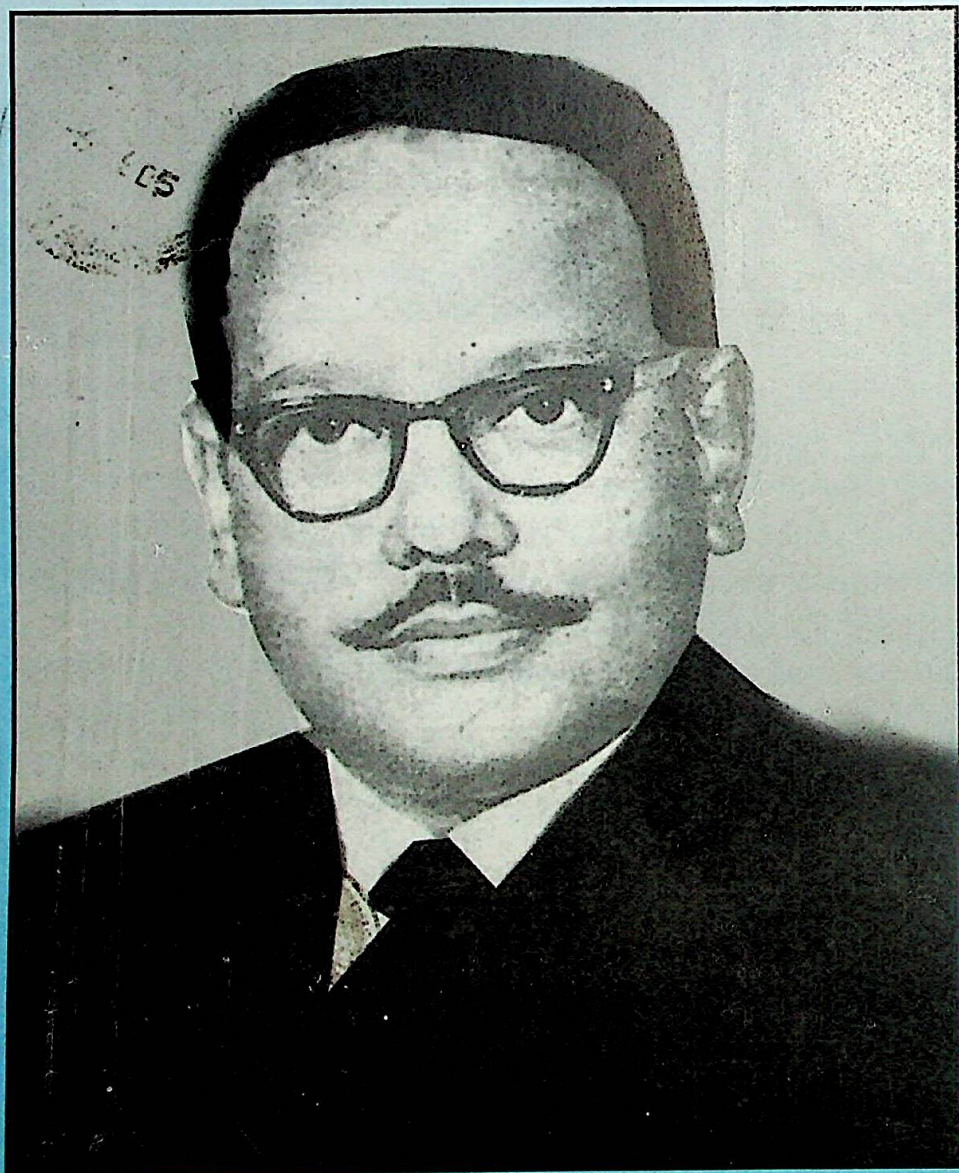
श्री राधाकृष्ण दास जी भुखमारिया, दिल्ली भूतपूर्व अध्यक्ष

निधन दि. 4 जुलाई, 2005

श्रीराधाकृष्णदासजी भुखमारिया, भूतपूर्व अध्यक्ष महासभा, दिल्ली के निधन पर महासभा में शोक - 4 जुलाई, 2005

आपका जन्म 26 अक्टूबर, 1925 को हुआ और अध्ययनकाल में आप सदैव सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते रहे। सन् 1947 में जब आप इंजिनियरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण कर लौटे तो आपके साथ इंजिनियरिंग की उपाधि के साथ महामना मदनमोहन जी मालवीय की हिन्दू संस्कृति की छाप भी थीं। सादा जीवन और उच्च विचार आपके जीवन का लक्ष्य रहा है। जीवन पर्यन्त आप सामाजिक व व्यापारिक गतिविधियों में भाग लेते रहे। आपका निधन 4 जुलाई, 05 को हो गया।

श्री राधाकृष्णदास जी भुखमारिया, दिल्ली 1963 में कोटा अधिवेशन में महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुये थे। इंजिनियरिंग की शिक्षा पूर्ण कर आपने मै. भानामल गुलजारीमल की प्रसिद्ध व्यापारिक प्रतिष्ठान का संचालन किया। महासभा अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने वाले आप प्रथम इंजिनियर थे। जब आप अध्यक्ष निर्वाचित हुये आपकी आयु 38 वर्ष थी। आपकी भाषा-व्यवहार इतना मधुर व सौम्य था कि आपकी अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठानों व सामाजिक संस्थाओं में मांग बनी रही। आप नेशनल स्पोर्ट क्लब ऑफ इण्डिया, बृजकला केन्द्र दिल्ली, प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन दिल्ली, राज. स्टाक होल्डर्स एसोसियेशन के निर्देशक तथा अनेक व्यापारिक संस्थानों से जुड़े रहे । आप दिल्ली अधिवेशन 1956 में स्वागत मंत्री थे। महासभा को टेक्नीकल शिक्षा की ओर प्रेरित करने में आपका प्रमुख हाथ रहा है। स्वजातीय क्षेत्र में आप 'राधे बाबू' के नाम से पहिचाने जाते थे। आप महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष लाला बनवारी लाल जी के पौत्र तथा लाला बालकिशन दास जी के ज्येष्ठ पुत्र थे।

आपके निधन पर एक शोकसभा दिनांक 9-7-2005 को संस्था के केन्द्रीय कार्यालय, जयपुर में आयोजित की गई। इस बैठक में संस्था के स्थानीय पदाधिकारी व का.का. के सदस्य उपस्थित हुये। श्रीरामरतन घीया ने श्री भुखमारिया जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुये उनकी महासभा में की गई सेवाओं को उल्लेख किया। आपके निधन को समाज व संस्था की अपूरणीय क्षति बताया। सभी उपस्थित सदस्यों ने दो मीनिट का मौन रखकर एक शोक प्रस्ताव स्वीकार किया व श्रद्धाजंलि अर्पित की।

श्री भुखमारिया जी का निधन महासभा की अपूरणीय क्षति है।

खण्डेलवाल महासभा पत्रिका

अ. भा. खण्डेलवाल वैश्य महासभा का मुखपत्र

प्रगतिशील राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार-पत्र

वर्ष : 8 | जुलाई, 2005 | अंक 1

सम्पादकीय....

प्रिय बन्धुओं, जय श्री कृष्ण,

आपको जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि वर्तमान में महासभा के पास धन का अभाव नहीं है। इसके लिए महासभा की वर्तमान टीम निश्चय ही बधाई की पात्र है। यह निश्चित है कि आगामी दिनों में छात्रवृत्ति/विधवा सहायता समय पर पहुँच जायेगी। आज समाज के बन्धु ही समाज की प्रगति के लिए तन, मन व धन न्यौछावर करने को आतुर है आवश्यकता वास्तविक उपयोग लेने वालों की है। अतः समाज बन्धुओं से मेरा अनुरोध है कि समाज बन्धु बेझिझक बिना किसी संकोच के अपनी वास्तविक आवश्यकता से अवश्य अवगत करावें। पत्रिका का नया स्वरूप आपके सम्मुख आ रहा है। नये सम्पादक मण्डल द्वारा पत्रिका के स्वरूप को बदल कर समाजोपयोगी नवीन अध्यायों का समावेश पत्रिका में किया जा रहा है।

महासभा पत्रिका आत्म निर्भर हो तभी उसका प्रकाशन अच्छे से अच्छे रूप में हो सकता है और पत्रिका को आत्मनिर्भर होने के लिये विज्ञापनों का सहयोग अत्यावश्यक है। देश भर में स्वजातीय बन्धुओं के प्रतिष्ठान, उद्योग व व्यवसाय है। उद्योगपति व व्यवसायी बन्धु प्रति माह पत्रिका में विज्ञापन देकर सहयोग करेंगे तभी यह कमी दूर हो सकेगी। साथ ही पत्रिका को आकर्षक बनाने हेतु अपने अनमोल सुझाव, जाति से संबंधित इतिहास, समाज के स्कूल, धर्मशाला अस्पताल, पुराने भवन आदि के बारे में जानकारी हो तो अवश्य उपलब्ध करावे ताकि यह जानकारी पत्रिका के माध्यम से समस्त समाज को दी जा सके। हम समाज के बुद्धिजीवियों, लेखकों, रचनाकारों से निवेदन करते हैं कि महासभा पत्रिका को अपनी रचनायें भिजवा कर सहयोग करें। रचनायें समाज के उत्थान व विकास के लिये होनी चाहिये। विरोधाभाष की सामग्री का पत्रिका में प्रकाशन नहीं होता।

पत्रिका प्रत्येक परिवार में पहुंचे यह हमारा प्रयास है जिन्हें भी पत्रिका नहीं मिलती है पत्रिका की सदस्यता ग्रहण कर पत्रिका मंगाना प्रारंभ करे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 41 रूपये तथा आजीवन शुल्क 301 रूपये है। अतः पत्रिका के अधिक से अधिक ग्राहक बने। स्वजातीय संस्थायें महासभा से सम्बद्धित होकर अपने-अपने क्षेत्र के सामाजिक समाचार भिजवायें और हर परिवार तक पत्रिका पहुंचे इसके लिये सहयोग करें।

सन्तोष रावत, प्रधान सम्पादक

प्रति का मूल्य : 5 रूपया, प्रकाशन संख्या 9,000, साधारण शुल्क : 41 रूपये वार्षिक आजीवन शुल्क : 301 रूपये

श्री खंडेलवाल वैश्य महासभा कार्यालय जयपुर में दिनांक 5 जुलाई, 05 को महासभा के आजीवन संरक्षक श्री जयनारायणजी मेठी दिल्ली का भव्य स्वागत

अ.भा.खंडेलवाल वैश्य महासभा के केन्द्रीय कार्यालय में दिनांक 5 जुलाई, 05 को प्रातः 11 बजे अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में महासभा के आजीवन संरक्षक श्री जयनारायण मेठी, दिल्ली, का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री कालीचरण दास जी कोडिया,अजमेर, उपाध्यक्ष, श्री रामदास जी सौंखिया, श्री रामेश्वर लाल खंडेलवाल लवाण वाले, श्रीमती भंवरदेवी रावत, जयपुर, श्री सुरेश मेठी, दिल्ली, प्रधानमंत्री श्री रमेश बड़ाया, मुम्बई, संयुक्त मंत्री (कार्यालय) श्रीरामरतन घीया, कोषाध्यक्ष श्री रामकिशोर ताम्बी, जयपुर के अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य सर्व श्री रामानन्द खंडेलवाल, सीताराम रावत, जगदीश नारायण रावत, कालीचरण रावत, सत्यनारायण नाटाणी, श्रीराम डंगायच, रामस्वरूप ताम्बी, ज्ञानचन्द खंडेलवाल, रामअवतार बड़ाया, रामस्वरूप डंगायच, जयपुर, श्री मातादीन गुप्ता, अलवर, श्रीमती सुमित्रा पाटोदिया, जयपुर उपस्थित थे।

इनके अतिरिक्त महासभा पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक श्री सत्यनारायण बाजरगान, जयपुर, श्री देवकीनन्दन खंडेलवाल, मुम्बई, श्री अशोक कुमार,अलवर, श्रीकृष्ण मुरारी खंडेलवाल-मथुरा, श्री दामोदर प्रसाद घीया, श्री राधेश्याम खारवाल व श्री उमेश गोटेवाला,जयपुर को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

सर्वप्रथम श्री रामरतन घीया, संयुक्त मत्री कार्यालय ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को उनके निर्वाचन पर हार्दिक बधाई दी एवं सभी उपस्थित बंधुओं से अपना अपना परिचय देने का निवेदन किया। सभी बन्धुओं ने अपना-2 परिचय कराया। श्री घीया ने कहा कि आज अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे बीच संस्था के आजीवन संरक्षक श्री जयनारायण जी मेठी अधिवेशन व चुनावों के पश्चात प्रथम बार कार्यालय में उपस्थित हुए है। साथ ही हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कालीचरणदास जी कोडिया एवं प्रधानमंत्री श्री रमेश जी बडाया भी हमारे बीच उपस्थित हैं। आज जयपुर के हम सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य माननीय श्री मेठी जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

अभिनन्दन की प्रथम कड़ी में सर्वप्रथम संरक्षक श्री जयनारायण जी मेठी का संस्था अध्यक्ष, समस्त पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। इसके पश्चात् कार्यकारिणी सदस्यों एवं उपस्थित अन्य बन्धुओं ने सभी पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। तदुपरान्त संस्था के प्रधानमंत्री ने सभी पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यालय की ओर से रामप्रसाद दुसाद, कार्यालय मंत्री ने सभी का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

प्रधानमंत्री श्री रमेश जी बडाया ने सभी का.का. सदस्यों से निवेदन किया कि वे महासभा के कार्यक्रमों में सक्रियता से जुड़े व आर्थिक सहयोग देने व दिलाने में अग्रिम पंक्ति में आवे। इस अवसर पर श्री कोडिया जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्था के प्रत्येक कार्य विधान के अनुसार सम्पन्न होंगे और समयबद्ध समस्त कार्य किये जावेंगे। साथ ही उपस्थित बन्धुओं को भी सक्रिय सहयोग हेतु आह्वान किया। उपाध्यक्ष श्री रामदास जी सौंखिया ने आश्वासन दिया कि जयपुर के सदस्यों एवं समाज के अन्य बन्धुओं का

महासभा को पूरा पूरा सहयोग प्राप्त होगा। इस अवसर पर उपाध्यक्ष श्री रामेश्वर लाल जी खंडेलवाल ने बताया कि इस महंगाई केयुग में दी जाने वाली छात्रवृत्तियाँ व विधवा सहायता नगण्य है, अतः इसे बढ़ाने हेतु प्रयास करना चाहिए। साथ ही उन्होंने यह भी आश्वासन दिलाया कि यदि समस्त लोग अपना-अपना दायित्व निभाते हुए प्रयत्नशील रहें तो इस पूनीत कार्य हेतु अर्थ की कमी नहीं आयेगी।

संरक्षक श्री जयनारायण जी मेठी ने अपने अभिनन्दन एवं सम्मान के लिए सभी को धन्यवाद दिया। साथ ही अपील की कि सभी पदाधिकारी व का.का.सदस्य अपने-2 दायित्वों का निर्वहन करें ताकि महासभा के कार्यक्रम और भी प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न हो सके। उन्होंने यह भी कहा कि संस्था द्वारा प्रयास कर महासभा भवन को ऐतिहासिक रूप दिया जाए। संस्था के कोषाध्यक्ष श्री रामकिशोर जी ताम्बी ने अपने दायित्वों के निर्वहन का आश्वासन देते हुए कहा कि यदि सर्वप्रथम जयपुर से धन संग्रह कार्यक्रम प्रारंभ किया जाय तो यहां के पदाधिकारी व सदस्य अपना पूरा सहयोग देकर कार्य को गति देंगे।

अंत में श्री रामरतन घीया ने सबको धन्यवाद देकर स्वल्पाहार हेतु निवेदन किया।

अ.भा. खंडेलवाल वैश्य महासभा,

गंगा मंदिर, स्टेशन रोड, जयपुर

महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. श्री रामप्रसाद जी अटोलिया का 113 वां जन्म दिवस 14 सितम्बर, 2005 को विद्यार्थी दिवस के रूप में खंडेलवाल महासभा भवन, शास्त्री नगर, में मनाया जावेगा। पिछले अनेक वर्षों से यह दिवस विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस दिन निम्नलिखित श्रेणियों के लिये चयनित छात्र-छात्राओं का महासभा की ओर से अभिनन्दन किया जावेगा व पुरुस्कृत किया जावेगा :-

1. उन छात्र-छात्राओं का जिन्होंने 2004-05 की हायर सैकण्डरी-सेकेण्ड्री या कॉलेज स्तर की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।
2. जिन छात्र-छात्राओं ने देश-विदेश में विशेष योग्यता अर्जित कर समाज का नाम रोशन किया है।
3. 2004-05 की इंजिनियरिंग, मेडिकल की परीक्षा में मैरिट में स्थान प्राप्त किया है। सी.ए. की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। क्रीडा या कला के क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता अर्जित की है।
4. किसी भी छात्र-छात्रा का आई.ए.एस. या आर.ए.एस. या समकक्ष प्रशासनिक सेवाओं में चयन हुआ है।

इन सबके लिये परीक्षा फल की प्रमाणित प्रतिलिपी व आवश्यक प्रमाण पत्र भिजवाना आवश्यक है। छात्र अपना नाम, पिता/माता का नाम, गोत्र, पूरा पता, जन्म तिथि पारिवारिक स्थिति की पूरी जानकारी के साथ पासपोर्ट साईज का एक फोटो अवश्य भिजवायें। ये जानकारियां महासभा कार्यालय को 30 अगस्त, 2005 तक प्राप्त हो जानी चाहिये। स्वजातीय संस्थाओं व बन्धुओं की जानकारी में इस प्रकार की प्रतिभायें हो तो वे भी अपना पूरा सहयोग प्रदान कर प्रमाणित जानकारी भिजवाकर सहयोग करें।

राम रतन घीया,
संयुक्त मंत्री

महासभा की का.का. समिति एवं महासमिति की बैंठकें पुष्कर अजमेर में सफलतापूर्वक सम्पन्न, ऐतिहासिक उपस्थिति

अ.भा. खंडेलवाल धर्मशाला पुष्कर (अजमेर) के आमंत्रण पर खंडेलवाल धर्मशाला,पुष्कर में दिनांक 23 जुलाई, 2005 को कार्यकारिणी समिति तथा दिनांक 24 जुलाई, 2005 को महासमिति की बैठक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष श्री कालीचरणदास कोडिया ने की तथा संचालन प्रधानमंत्री श्री रमेश बडाया ने किया।

आयोजकों की ओर से खंडेलवाल धर्मशाला व माहेश्वररी धर्मशाला में निवास व भोजन की व्यवस्थायें की गई थी। का.का. की बैठक में 141 सदस्यों की उपस्थिति तथा महासमिति की बैठक में 286 सदस्यों की उपस्थिति थी। यह उपस्थिति महासभा की अब तक की उपस्थिति की ऐतिहासिक उपलब्धि थी। देश के सभी भागों से का.का. के सदस्य व महासमिति के सदस्य इस बैठक में उपस्थित हुये। वर्तमान में भीषण मंहगाई को देखते हुये का.का. की मीटिंग में छात्रवृतियाँ, महिला व जनकल्याण सहायताओं में 50 प्रतिशत की वृद्धि की गई साथ ही एजेण्डे के अनुसार सारे कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुये। महासमिति की बैठक में आगामी सत्र के लिये निर्णायक मण्डल का निर्विरोध निर्वाचन हुआ जिसमें- श्री रामचन्द्र आकड, जयपुर, श्री ओमप्रकाश रावत, दिल्ली व श्री महेशचन्द खंडेलवाल वृन्दावन, सर्वसम्मति से चुने गये। इसके अतिरिक्त मीटिंग में कुछ उप समितियों के संयोजकों की घोषणा की गयी। जिसमें मुख्य रूप से अर्थ समिति के संयोजक श्री राधेश्याम खूंटेटा, मुम्बई, विधान संशोधन समिति के संयोजक श्री ओमप्रकाश गुप्ता, मुम्बई एवं प्रतिभा सम्मान समारोह के संयोजक श्री नरेश रावत, दिल्ली का मनोनयन किया गया।

इन बैठकों के अवसर पर अर्थ समिति के संयोजक श्री राधेश्याम खूंटेटा बम्बई के प्रयास से लगभग 24 लाख रूपयों के आर्थिक सहयोग के वचन प्राप्त हुये। उदयपुर अधिवेशन से अब तक महासभा की छात्रवृत्ति, महिला, व जनकल्याण सहायताओं की पूर्ति के लिये लगभग 90 लाख रूपयों के वचनों की घोषणा हो चुकी है।

इस अवसर पर धर्मशाला प्रबन्ध कमेटी की ओर से महासभा के पदाधिकारियों व का.का. सदस्यों का अभिनन्दन किया गया। महासभा की ओर से भी धर्मशाला के सभी पदाधिकारियों का अभिनन्दन किया गया तथा मीटिंग, आवास, व भोजन की व्यवस्थाओं के लिये धन्यवाद दिया गया। इन बैठकों का विस्तृत विवरण आगामी अंक में दिया जावेगा।

महासभा के उदयपुर अधिवेशन में दि. 4-5-6 जून, 2005 के दौरान घोषित वचन राशि की सूची

451000/- श्री कालीचरणदास कोडिया,अजमेर
151000/- श्री राधेश्याम खूंटेटा, मुम्बई
151000/- श्री विजय खंडेलवाल, कटक
151000/- श्री अक्षय खंडेलवाल, कटक
31000/- श्री मूलचन्द दुसाद, अजमेर
51000/- श्रीमती कमला गुप्ता ,उदयपुर
151000/- श्रीमती कुमुद जगदीशप्रसाद, मुम्बई
151000/- श्री राधेश्याम खूंटेटा, बनारस
31000/- श्री मोहनलालभंवरलाल टोडवाल कोटा
151000/- श्री गुलाबचन्द कानूनगो, मुम्बई
151000/- श्री विमलकुमार खूंटेटा, नागपुर
51000/- श्री रामचन्द्र आकड, जयपुर
108000/- श्री रामदास सौंखिया, जयपुर
756000/- श्री श्रीकिशन खंडेलवाल, दिल्ली
36000/- श्री हरिनारायण श्यामलाल मामोडिया, कलोल
180000/- श्री जयनारायण मेठी, दिल्ली
51000/- श्री मदनलाल दुसाद, आकोला
51000/- श्री अतुल घीया, इन्दौर
396000/- श्री रमेश नानू लाल बडाया, मुम्बई
72000/- श्री सीताराम जौहरी, दिल्ली
36000/- श्री श्यामसुन्दर खंडेलवाल,मथुरा
36000/- श्री राजकुमार खंडेलवाल आगरा
36000/- श्री गोविन्द खंडेलवाल, आगरा
36000/- श्री घनश्याम मेहता, कोटा
36000/- कृष्णमुरारी खंडेलवाल, मथुरा
36000/- खंडेलवाल महिला संगठन, इन्दौर
36000/- श्री सुधीर झालानी, अहमदनगर
43200/- डॉ. आर.सी. एवं सरोज गुप्ता, मथुरा
36000/- श्री ओमप्रकाश सांभरिया, अजमेर
36000/- श्री शम्भूदयाल सर्राफ, दौसा
36000/- श्री श्रीगोपाल आकड, दौसा
72000/- श्री सत्यनारायण गजानन्द नाटाणी,जयपुर
36000/- श्री गिरिराज बूसर , कोटा
36000/- श्री मालीराम ताम्बी, चौमू
36000/- श्री भगवानसहाय ओढ, जयपुर
36000/- श्री लक्ष्मण प्रसाद खंडेलवाल,मथुरा
180000/- श्री सुभाष सुरेन्द्र बाजरगान, दिल्ली
36000/- श्री कैलाश ताम्बी, जयपुर

36000/- श्री जवाहर लाल टोडवाल, मथुरा
21000/- श्री गोपीचन्द नारायणदेवी, जयपुर
36000/- श्रीमती रामजानकी देवी सीतारामजौहरी, दिल्ली
21000/- श्री लक्ष्मीचन्द खंडेलवाल, आगरा
36000/- श्री सीताराम खूंटेटा, अजमेर
25000/- श्रीमती सरोज राजोरिया, थाना
54000/- श्री देवीदत्त शाह मुम्बई
11000/- श्री रामप्रसाद दुसाद, जयपुर
3300/- श्री रमेश फरसोईया राजनन्दगांव
36000/- श्री सुरेशचन्द रावत, नासिक
36000/- श्री महेश ठाकुरिया, मुम्बई
18000/- श्री रामानन्द खंडेलवाल, जयपुर
51000/- श्री सुरेश पाटोदिया, जयपुर
36000/- श्री रामकिशोर ताम्बी, जयपुर
39600/- श्री चन्द्रप्रकाश दुसाद, अहमदनगर
9300/- महिला मण्डल, अहमदनगर
36000/- श्री रूडमल जगदीशनारायण रावत, जयपुर
15300/- श्री गिर्राजप्रसाद खंडेलवाल, अलवर
11001/- श्रीमती मीनाक्षी अजय ताम्बी, इन्दौर
18000/- श्रीमती राज खंडेलवाल, मथुरा
3300/- श्रीमती सरोज खंडेलवाल, अजमेर
11000/- श्रीमती कृष्णा खंडेलवाल, बरेली
11000/- श्रीमती गीता शाह, दिल्ली
33000/- श्रीमती सावित्री देवी खंडेलवाल, दिल्ली
36000/- श्री श्रीकान्त खंडेलवाल, नैनीताल
11000/- श्री बिट्ठलदास खंडेलवाल, नलखेडा
36000/- श्री सीताराम ताम्बी, जयपुर
15300/- श्री राजेश खंडेलवाल हल्द्वानी
39600/- श्री जी.डी. खंडेलवाल, दिल्ली
1212/- श्री राकेश खूंटेटा, जयपुर
1500/- श्री मांधव प्रसाद कायथवाल, जबलपुर
1500/- श्री भंवर लाल खंडेलवाल, नाथद्वारा
3636/- श्री महादेव प्रसाद मामोडिया, कलोल
500/- श्री श्यामसुन्दर खंडेलवाल, आकोला
303/- श्री गजानन्द कायथवाल, इन्दौर
3300/- श्री प्रकाशचन्द राजोरिया, इन्दौर
400000/- श्री पी.डी. गुप्ता, दुर्ग

दिनांक 24-7-2005 का.का. व महासमिति मीटिंग पुष्कर (अजमेर) में घोषित वचन राशि

36000/- श्री ओमप्रकाश गुप्ता, उदयपुर
36000/- श्री रामरतन घीया, जयपुर
39600/- श्री प्रकाश खंडेलवाल, दिल्ली
15000/- श्री मुरलीधर धामानी, इन्दौर
39600/- श्री राजेन्द्र भुखमारिया, इन्दौर
108000/- श्री रामेश्वर प्रसाद खंडेलवाल
42600/- श्री रामेश्वर प्रसाद खंडेलवाल (फैक्स फोटो)
36000/- श्री कैलाश रावत इन्दौर
36000/- श्री जगदीश केदावत, जयपुर
11111/- श्री दिनेश कुमार गिरधारी लाल खंडेल, इन्दौर
5111/- श्री राजेश कुमार शंकर लाल , इन्दौर
36000/- श्री जयनारायण सत्यनारायण ताम्बी, जयपुर
11111/- श्री सुभाष रतन लाल खंडेलवाल, इन्दौर
5100/- श्री महेश रावत लश्कर ग्वालियर
5100/- श्री राकेश रावत, लश्कर, ग्वालियर
5100/- श्री अनिल बडगोती, मुरार
5100/- श्रीमती शशि रावत, लश्कर, ग्वालियर
21000/- श्री सन्तोष कुमार धामानी, इन्दौर
11000/- श्री सुनील रामकिशनपाटोदिया,
21000/- श्री नरेन्द्र हरिनारायण टोडवाल, इन्दौर
21000/- श्री अजय कुमार खंडेलवाल, इन्दौर
21000/- श्री लोकेश खंडेलवाल, इन्दौर
36000/- श्री रामस्वरूप डंगायच, जयपुर
36000/- श्री राधेश्याम बूसर, लवाणवाले
36000/- श्री रामवतार लकडा, जयपुर
5500/- श्री रामचन्द्र बम्ब, इन्दौर
5500/- श्री रामनारायण खंडेलवाल, इन्दौर
36000/- श्री दिनेश चंद खंडेलवाल, आगरा
180000/- श्री महेश खंडेलवाल, वृन्दावन
5111/- श्री राजेन्द्र कूलवाल, इन्दौर
36000/- श्री हेमराज कासलीवाल, जयपुर
108000/- श्री दामोदर प्रसाद महेन्द्रकुमार हल्दिया, जयपुर
108000/- श्री सुरेश खंडेलवाल, मथुरा
11000/- श्री बालकृष्ण खंडेलवाल, डीग
11000/- श्री देवीशरण पीतलिया, डीग
5100/- श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता, डीग
11000/- श्री सीताराम रावत, जयपुर
15000/- श्री दामोदर प्रसाद घीया, जयपुर
11000/- श्री रामसहाय खंडेलवाल, खेडली
15300/- श्री प्रहलाद मेठी, गंगापुर सिटी
3300/- श्री अनिल टोडवाल, इन्दौर
5100/- श्रीमती मिथलेश मोदी, खेडली
5100/- श्री श्यामलाल खंडेलवाल, भोपाल
18000/- श्रीमती शशि खंडेलवाल, बाय (सीकर)
11000/- श्री बालकिशन ठाकुरिया, गोवर्धन
21000/- श्री मती चांद कंवर दुसाद अजमेर
36000/- श्री दिनेश कुमार कानूनगो जयपुर
39600/- श्री ज्ञानचन्द खंडेलवाल, जयपुर
36000/- श्री श्रीराम डंगायच, जयपुर
15000/- श्री नन्दलाल सुभाष चन्द खंडेल. अजमेर
15000/- श्री ओमप्रकाश दुसाद, जोधपुर
15000/- श्री ओमप्रकाश वैद, अजमेर
15000/- श्री हरिप्रकाश सचिन कुमार, अजमेर वैद
15000/- श्री प्रहलाद राय खंडेलवाल, बरेली

खंडेलवाल वैश्य महासभा का मुम्बई समाज के लिए स्नेह सम्मेलन मिलन समारोह दि. 17 जुलाई, 05 को अशोका हाल नरीमान् पाइंट, मुम्बई में सम्पन्न

मुम्बई समाज द्वारा उदयपुर के 30वें अधिवेशन में चुने गये प्रतिनिधियों के स्वागत हेतु एक स्नेह सम्मेलन का आयोजन रखा गया जिसमें मुम्बई समाज के गणमान्य भाई बहिनों को आमंत्रित किया गया। आमंत्रित व्यक्तियों में करीब 125 की उपस्थिति रही। इस आयोजन में महासभा के लिए अगले 3 वर्ष तक के लिए समाज में मार्गदर्शन की विचारधारा रखी।

समारोह के विनीत महासभा के श्री गुलाबचन्द्र गुप्ता, उपाध्यक्ष, मुम्बई, श्री रमेशचन्द्र बडाया, प्रधानमंत्री, श्रीमती कुमुद बहिन सं. मंत्री महिला, श्री राधेश्याम खूंटेटा, संयोजक अर्थसमिति, श्री ओमप्रकाश गुप्ता, संयोजक विधान संशोधन, श्री चिरंजीलाल भुखमारिया, श्री श्याम ताम्बी, श्री महेश ठाकुरिया, श्री आनन्द गुप्ता, श्री सुभाष मोहन लाल एवं श्री विपिन कुमार शाह थे।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री जयनारायण मेठी, आजीवन संरक्षक, श्री कालीचरणदास कोडिया अध्यक्ष, श्री अनिल कुमार खंडेलवाल, चेयरमेन एम.डी. बैंक ऑफ बडौदा, श्री विजय कुमार खंडेलवाल कटक सं. मंत्री, श्री सुधीर झालानी अहमदनगर, सं. मंत्री, श्रीमती भंवरदेवी रावत, उपाध्यक्ष महिला, श्रीमती कुमुदबहिन सं. मंत्री, महिला कार्यकारिणी सदस्य- सुरेश रावत नासिक, श्रीमती सरोज राजोरे, वश्री नवलकिशोर झालानी देहली उपस्थिति थे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में समाज के संत शिरोमणी सुन्दरदास जी, सरस्वती जी, गणेश जी एवं महालक्ष्मी को माल्यार्पण किया गया एवं मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत - श्रीमती निरजा प्रदीप गुप्ता, श्रीमती रीना पुरूषोत्तम खूंटेटा, श्रीमती स्वेता नरेश खूंटेटा एवं श्रीमती सजना शोभित गुप्ता द्वारा गणेश, सरस्वती, महालक्ष्मी की वंदना से प्रारम्भ किया गया। साथ ही सुन्दर गीत द्वारा मेहमानों का स्वागत किया गया।

मंच संचालन श्रीमती मेघना रोहित खूंटेटा द्वारा अपनी सुन्दर वाणी से श्रीमेठी जी, श्री कोडियाजी व श्री अनिल जी का स्वागत से किया व उनके जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला।

प्रधानमंत्री श्री रमेश बडाया द्वारा मुम्बई समाज के चुने गये प्रतिनिधि तथा आमंत्रित समाज के व्यक्तियों एवं मुख्य मेहमानों का जो मंच पर विराजमान थे, मालाओं, पुष्पगुच्छ तथा फूलों के गजरों से स्वागत किया।

श्री राधेश्याम खूंटेटा द्वारा आज के मिलन समारोह की आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा महासभा द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों पर एवम् सहायता के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि महासभा द्वारा दिये गये अनुदान से हजारों की तादाद में समाज के व्यक्तियों ने शिक्षा ग्रहण करके बडे बडे पदों पर आसीन है तथा विधवाओं की सहायता से उनके परिवार भी समाज में आज मौजूद है। समाज एक दर्पण है समाज के बिना व्यक्ति की कोई पहचान नहीं है। खंडेलवाल समाज को सब मिलकर समृद्ध बनायेंगे का आह्वान देते हुए पधारे हुए व्यक्तियों से महासभा को मार्गदर्शन के लिए अपने अपने विचार रखने को कहा।

खुले मंच पर मार्गदर्शन हेतु मुख्य रूप से श्री जगदीशनारायण गुप्ता, गौरी शंकर, मुरारी लाल ठाकुरिया, श्री देवीदत्तशाह, श्री सुभाष डंगायच, श्री मनीष खंडेलवाल, श्री राजीव खंडेलवाल, श्रीमती ममता खंडेलवाल ने अपने विचार व्यक्त किये।

चुनाव समय पर करवाना, विधान के अनुसार निर्णायक मण्डल का गठन करना, सहायता बढाई जावें, न्यायालय की शरण न लेते हुए प्रत्येक मामले में निर्णायक मण्डल का फैसला ही माना जावे। समाज के अधिकांश व्यक्तियों द्वारा गेट टू गेदर करे तथा महासभा की गतिविधि की जानकारी देवें समाज में प्रेम सौहार्द्रपूर्ण वातावरण से समाज की छबी सुधरे, अधिक से अधिक धन एकत्रित कर

सही व्यक्तियों को वितरण करें । कुछ बन्धुओं का सुझाव था कि सहायता सही रूप से वितरण नहीं होती है बिना जरूरत के लोगों को सहायता दी जाती है, जरूरतमंद व्यक्ति रह जाते है। दान देने वाले लोगों के धन का सही सदुपयोग नहीं होता इस प्रकार के सुझाव दिये गये।

सभी सुझावों को अध्यक्ष एवं मंत्री ने सुना तथा संतोष प्रद जवाब देकर संतुष्ट किया। सहायता के लिए समाज को धन देने को कहा । कार्यकारिणी सदस्य अपना दायित्व समझकर अधिक से अधिक धन महासभा हेतु प्राप्त करेंगे तो किसी प्रकार का अभाव नहीं होगा। सहायता के लिए बताया कि एक निर्धारित कमेटी द्वारा जांच के उपरान्त आवश्यक व्यक्तियों को सहायता भेजी जाती है। फिर भी नवनिर्वाचित समिति को उक्त सुझाव से अवगत करा दिया जायेगा।

धन संग्रह हेतु अर्थ समिति के संयोजक खूंटेटा ने अपनी विचारधारा से सबको मुग्धकर निम्न प्रकार से वचन प्राप्त किये :-

108000/-	श्री सुभाष मोहन लाल जुहु	3000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
108000/-	श्री आनन्दप्रकाश,गुप्ता,जुहू	3000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	(सिर्फ शिक्षा हेतु)
180000/-	श्री ओमप्रकाश गुप्ता,मालाड	5000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	(सिर्फ शिक्षा हेतु)
180000/-	श्री जगदीश गोपीनाथ गुप्ता	5000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
108000/-	श्री भगतसिंह फूलचन्द	3000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
72000/-	श्री गोविन्ददास अलोक खंडेलवाल	2000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
72000/-	श्री दिनेश चन्द मुकेशचंद मावावाला	2000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
72000/-	श्री राजीव खंडेलवाल	2000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
72000/-	श्री बिसम्बर जगन्नाथ खंडेलवाल	2000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
72000/-	श्री रमेशचंद्र बद्रीप्रसाद बुढवारिया	2000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
50000/-	श्री सीताराम खंडेलवाल, भयन्दर	1400/- प्रतिमाह	3 वर्ष	
36000/-	श्री हरिकिशन खंडेलवाल	1000/- प्रतिमाह	3 वर्ष	

उदयपुर अधिवेशन स्थल पर दिये गये मुम्बई बन्धुओं द्वारा रू. 964000/- के वचन अतिरिक्त है एवं गतवर्ष श्री गौरी शंकर जी चौधरी द्वारा घोषित सहायता भी जारी रहेगी। इसके अतिरिक्त महासभा पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर विज्ञापन हेतु भी आश्वासन दिया गया।

उपरोक्त सहायता के वचन देने वाले बन्धुओं का जोरदार तालियों से स्वागत किया गया अध्यक्ष जी व मेठी जी द्वारा माल्यार्पण किया गया तथा धन्यवाद दिया गया।

प्रधानमंत्री रमेश बडाया ने सबका अभिवादन किया। श्री मेठीजी व कोडिया जी ने सहायता देने वाले एवं समस्त आगन्तुक व्यक्तियों का हार्दिक अभिनन्दन किया।

उपाध्यक्ष श्री गुलाब चन्द गुप्ता ने अपने विचार प्रकट करके इसी प्रकार के कार्यक्रम हर कार्यकारिणी क्षेत्र में करने का सुझाव दिया जिससे समाज बन्धुओं में हमारी छवि भी सुधरेगी और धन संग्रह करने में हमको मदद मिलेगी।

सभी ने मिलकर सामूहिक स्वरूचि भोजन का आनन्द लिया। आगन्तुक समाज बन्धुओं ने कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की।

आज के ही दिन हमारे समाज के वयोवृद्ध व्यक्ति श्री भंवरलाल जी कूलवाल थाना का निधन होने पर श्रद्धांजलि तथा मौन धारण किया।

राधेश्याम खूंटेटा, संयोजक अर्थसमिति

चौघड़िया

Shri Amit D.Modi, 003/A Dev Meghna Co-Op.
HSG Soc. Jesal Park, Bhayandar (E) 401105

शुभ कार्यों में सफलता

चौघड़िया एक प्रचलित एवं प्राचीन विषय है, इसका हमारे समाज में शुभ कार्य हेतु प्रयोग किया जाता है। प्राचीन कालीन ऋषि-मुनियों ने शास्त्रों में ''चौघड़िया'' का महत्व दर्शाया है, वर्षों से मानव समाज ''चौघड़िये'' का शुभ कार्यों में सफलता को प्रबल बनाने के लिये उपयोग बड़ी सिद्धता से करता आ रहा है और आज भी इसका उपयोग होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मानव समाज के लिये ''चौघड़िया'' का कार्य को सफल बनाने में अच्छा योगदान रहा। हमारे ऋषि मुनियों ने अपने तपो-बल द्वारा अर्जित अपने आत्मज्ञान की धरोहर विरासत में शास्त्रों के रूप में छोड़ गये, इसके लिए हमें उनका आभारी होना चाहिये। इसका उपयोग हम अपने जीवन को सफल बनाने में लाते है। दिनों के नाम वार एवं क्रमवार चौघड़िये की सूची :-

होते हैं। चौघड़िये के समय मान के विषय में शास्त्रों में प्रकाश डाला गया है उस की जानकारी इस प्रकार है, रात व दिन मिल कर कुल चौबीस घंटे होते है इन चौबीस घंटों में सोलह चौघड़िये होते है, दिन के आठ चौघड़िये एवं रात्रि के आठ चौघड़िये। दिन के आठ चौघड़िये में से हर एक चौघड़िये का समय-मान जानने के लिये सूर्योदय से सूर्यास्त तक जो कुल समय हो उसे आठ से विभाजित कर एक चौघड़िये का समय मान ज्ञात किया जा सकता है। पहले चौघड़िये को सूर्योदय के समय से एक चौघड़िये का समय मान गिनकर क्रमवार बाकी के चौघड़िये के समय मान ज्ञात कर सकते है। इसी प्रकार रात्रि के चौघड़िये का समय-मान ज्ञात करने के लिये सूर्यास्त से सूर्योदय के कुल समय को आठ से विभाजित कर समय-मान ज्ञात कर सकते है। सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय

रात चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काक	उद्वेग
चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत
काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काक
शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन चौंघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काक
चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काक	उद्वेग
काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काक	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काक

आजकल देखने में आता है कि एक चौघड़िये समय-मान डेढ़ घंटा 1.30 मिनट मानकर सारे कार्य किये जाते हैं जो कि समयानुसार सही नहीं साबित

ज्ञात करने के लिये भारतीय पंचांग अथवा पंचांग के कलेंडर में सूर्योदय सूर्यास्त समय दर्शाया हुआ रहता है। चौघड़िये के कुल सात नाम है, सातों ही सात

मुख्य ग्रह से संब्रंधित है और एक सप्ताह (अठवाडिया) के सात दिनों के सात नाम वार है ये भी सात मुख्य ग्रह से संबंधित है, इसकी जानकारी निम्नलिखित है।

चौघड़िये के नाम		संबंधित ग्रह
उद्वेग	-	सूर्य
अमृत	-	चंद्र
रोग	-	मंगल
लाभ	-	बुध
शुभ	-	गुरू
चल	-	शुक्र
काक	-	शनि

जिस दिन जो वार हो उस वार से संबंधित चौघड़िया दिन का पहला व अंतिम होता है जैसे रविवार हो तो पहला व अंतिम चौघड़िया उद्वेग होगा औंर रात्रि का उद्वेग से गिनते हुये छठा चौघड़िया पहला व अंतिम होगा जैसे उद्वेग से क्रमवार गिनने से छठा शुभ चौघड़िया होगा।

ग्रहों अथवा कुल रिति रिवाजों के प्रति हमारे सभ्य समाज में डर अथवा हिचक महसूस किया जा सकता है। उदाहरणः चौघड़िये में उद्वेग रोग काक (सूर्य मंगल शनि ग्रह) में से किसी प्रकार के कार्य करने की शुरूआत हमारे सभ्य समाज में मानसिक तैयारी नहीं पायी जाती है। कारण हमारी नजरों में यह चौघड़िये अशुभ ग्रहों से संबंधित है जबकी कोई भी अशुभ ग्रह अशुभ ही फल प्रदान करें अथवा कोई शुभ ग्रह शुभ फल प्रदान करे यह जरूरी नहीं है, क्योंकि किसी भी ग्रह की फल प्रदान करने की क्षमता उसकी अपनी स्थिति अथवा समयानुसार है, अतः कोई भी निर्णय लेने से पहले कोई भी कार्य की शुरूआत करें, अपने स्वयं की जन्म कुंडली के ग्रहों की स्थिति अनुसार शुभ समय चुनकर कार्य का संपादन करना चाहिये।

समयानुसार समाज का कोई बन्धु सलाह लेना चाहे तो लेखक से सीधे पत्र व्यवहार कर सकता है।

नाना-नानी के नुस्खे

- खजूर गरम पानी के साथ लेने से कफ दूर होता है।
- नींबू का रस दाँत की पेडियों पर घिसने से दांतों से खून निकलना बंद होता है।
- गाजर का रस पीने से दस्त बंद होते है।
- हींग सेककर गरम पानी के साथ लेने से खांसी दूर होती हे।
- शुद्ध हल्दी का चूर्ण रात को सोने से पहले पानी के साथ लेने से बवासीर दूर होती है।
- रोज लहसुन खाने से कब्ज दूर होती है।
- लहसुन और काली मिर्च को पीस कर लेप करने से गॉठ फोडा पककर फूट जाता है।
- पालक और तांदलजा के पत्ती की पोटली फोडे पर बांधने से फोडा पक जाता है।
- प्याज और गुड खाने से बालक की ऊँचाई बढती है।
- पागल कुत्ते के काटने पर प्याज का रस और शहद मिलाकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी ठीक हो जाता है।

माया खंडेलवाल
सी-4/127 आवास नगर देवास-455 001

महासभा कार्यालय में फैक्स, प्रिन्टर एवं फोटो स्टेट मशीन का उद्घाटन

खंडेलवाल महासभा कार्यालय, शास्त्री नगर में फैक्स, प्रिन्टर व फोटो स्टेट मशीन लगाई गई है, जिसका उद्घाटन संस्था के उपाध्यक्ष श्री रामेश्वरप्रसाद खंडेलवाल, लवाण वालों ने फीता काटकर दि. 16-7-05 को किया। इस अवसर पर संस्था के संयुक्तमंत्री श्री रामरतन घीया,कोषाध्यक्ष श्री रामकिशोर ताम्बी, कार्यालय मंत्री श्री रामप्रसाद दुसाद, का.का. सदस्य श्री सूरजमल रावत बूज उपस्थित थे। श्री रामेश्वरप्रसाद जी खंडेलवाल, लवाणवालों ने इन मशीनों को अपनी ओर से लगाये जाने की घोषणा की। सभी ने आपकी इस घोषणा का स्वागत करते हुए आपका आभार व्यक्त किया।

संत सुंदरदास जी भक्त व बिरहनी के प्रयत्नों में तुलनात्मक एकरूपता

प्रस्तुति -सत्यनारायण खंडेलवाल, नागपुर-1

संत सुंदरदास जी कहते हैं कि भक्त के लिये पतिव्रता एक आदर्श है। संतजी ने परमात्मा की प्राप्ति के लिये भक्त को प्रियतमा के रूप में स्वीकारा है। उन्होंने परमेश्वर के प्रति अपनी अनन्य भावना बिरहणी के रूप में स्थापित की है। बिरहिणी वही होती है, जो पतिव्रता होती है पति के प्रति एकनिष्ठ होती है, उसकी अनुभूति उसे तड़पाती हे। सवैया ग्रंथ के पतिव्रता शीर्षक में संतजी काव्यछंद की रचना करते हैं :-

"पति ही सौं प्रेम होइ, पति हों सो नेम होइ,
पति ही सो क्षेम होइ, पति ही सों रत है।
पति ही है यज्ञ योग, पति ही है रस भोग,
पति ही है सों जप तप, पति ही हो यत हैं॥
पति ही है ज्ञान ध्यान, पति ही है पुण्यदान,
पति ही है तीर्थ न्हान, पति ही को मत है।
पति बिन पति नाहीं, पति बिन गति नाहिं,
सुंदर सकल बिधि एक पतिव्रत है॥

पतिव्रता के लिये पति जिस स्वरूप में सर्वस्व है, उसी प्रकार भक्त के लिये भगवान सर्वस्व होना चाहिये। साधक की अवस्था प्रभु बिन नीरस होनी चाहिये। साखी ग्रंथ में संत सुंदरदासजी छंदों की रचनाओं में कहते हैं कि साधक को पत्नी के गुणो को, यथा- शील (पतिव्रता की शालीनता पति में ही होती है), क्षमा, दया, धीरज, सत्यता आदि पतिव्रता के गुण प्रभु के प्रति सेवक में होने चाहिये। पत्नी पति के भरोसे रहती है, उसी प्रकार भक्त को भगवान का भरोसा करना चाहिये।

सेवा- साहिब मेरा रामजी सुन्दर षिज मति गार,
पांव पलौटे प्रीति सौं सदा रहे हुसियार।

पतिव्रता अपने पति को ही परमेश्वर मानकर उसकी सेवा में लगी रहती है। भक्त स्वयं को प्रभु का सेवक समझकर उसकी सेवा में तत्पर रहता है।

पत्नी की रहनी का गुण-

रजा राम की सीँस पर आज्ञा मेटे नाहिं।
ज्यों राषे त्यों ही रहें सुंदर पतिव्रत मांहि।

पतिव्रता जैसे पति रखे, उसी स्थिति में रहती है। संतजी साधक के लिये कहते हैं कि प्रभु जैसे रखे उसी में आनंद मानना चाहिये।

जो प्रभु को प्यारी लगै सोई प्यारी मोहि,
सुंदर ऐसैं समुझि करि यों पतिव्रता होहि॥

पति (प्रभु) को जो प्यारा वही मुझे भाता है इसी पतिव्रता की भावना को लेकर भगवान की भक्ति में लीन होना चाहिये।

आध्यात्मिक अनुभूति

परमात्मा से सम्बन्धित अनुभव, संवेदना या साक्षात्कार ज्ञान का अनुभव प्राप्ति के लिये भक्त को विविध साधनों का अवलम्ब करना होता है। जैसे आत्मचिंतन, योग, शरणागति, विरह अनुभूति आदि

विरह अनुभूति- संत सुंदरदास जी ने परमेश्वर के प्रति अपनीं अनन्य प्रेम भावना बिरहणी के रूप में स्थापित की है। पत्नी बड़ी चिन्ता में है-उसका प्रिय, उसका प्राण उससे दूर है, बिछुड़ गया है। उसी की ओर उसका ध्यान लगा है- मुख में केवल उसकी बात रहती है, नेत्रों से आंसुओं की झड़ी लगी है। ऐसे ही परमात्मा की कृपा नहीं हुई, उसका ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, उसे पाने के लिये साधक (भक्त) बैचेन

हो उठा है। संतजी के काव्य छंदों में विरही की विविध छटाएं दृष्टिगत होती है। साखी ग्रंथ में संत सुंदरदासजी की बिरहिणी अनुभूति छंदों में व्यक्त है, यथा-

चाह–सुदर विरहनि अति दुःखी पीव मिलन की चाह,
निस दिन बैठी अनमनी नैंननी नीर प्रवाह।

व्याकुलता– सुंदर व्याकुल बिरहणी दीन भई बिललाइ,
दंत निणां लिये कहेरे पिय आय दिवाइ।

अपने प्रिय को मिलने के लिये बिरहणी व्याकुल तो है ही, किन्तु अन्यमनस्क अवस्था में दीन होकर प्रतीक्षा कर रही है।

फाग– अपने अपने कंत सौ सब मिली षेलहिं फाग,
सुंदर बिरहनि देषि करी उसी बिरह के नाग।

फाग का त्यौहार आया, बिरहिणी घर में उदास बैठी है। किन्तु अपनी सखियों को अपने अपने कंत के साथ खेलते देखकर उसे अपने प्रिय का अभाव बड़ा कष्ट दे रहा है। बिरहरूपी नाग उसे डंक मार रहे हैं।

चिन्ता– बहुत दिन हुये अपने प्रिय के न आने से प्रिया चिन्तित है। उसे दुख होता है कि सारा जीवन यौवन बीता जा रहा है और प्रिय नहीं आये-

जिस बिधि पीव रिझाइये सो बिधि जानि नाहिं,
जीवन जाई उतावला, सुंदर यह दुःख माहिं।
किये सिंगार अनेक मैं नष सिष भूषन साजि,
सुंदर पिय रीझे नहीं तो सब कौने काज।

प्रिय को रिझाने के लिये उसने इतना श्रृंगार किया और रिझाने के लिये अनेक प्रयत्न किये। वही अनुकूल नहीं हुआ तो श्रृंगार किसके लिये करूं।

कंप– पावस नृप चढ़ि आइयो साजि कटक मम गेह,
सुंदर बिरहनि थरसलि कंपि उठी सब देह।

प्रिय छोड़कर निकल गये। अब तक आये नहीं। मैं घर में अकेली हूं। सारी सृष्टि भयावह लगती है। बिरहणी इस सूनेपन से कांप उठी है।

प्रलाप– सुंदर बिरहनि बंदि मैं निस दिन करे पुकार
पिय रहयो कहुं बैसि कै बंदि छुड़ावन हार।

बिरहिनी रात दिन प्रिय को पुकारती है। किन्तु बिरह की बंदिशाला से छुड़ाने वाला प्रिय कहीं किसी दूसरे के घर निश्चित होकर बैठा है। प्रलाप करने के सिवा वह और क्या कर सकती है?

मरण–बिरहा दुखदाई लग्यौ मोरे ऐठिं मरोरि।
सुंदर बिरहनि क्यों जिवै सब तन लियौ निचौरि।

विरह के कारण उत्पन्न दुःख विरहिणी को ऐंठ मरोडकर मार रहा है। इस बिरह ने सारा तन निर्बल कर डाला है। अब जीने में क्या रखा है? विरह की मानसिक अनुभूति संत सुंदरदास जी ने वर्णित की है। नारी की विरह अवस्थाओं का स्वभाविक वर्णन, भक्त का ईश्वर के प्रति प्रेम और वह प्राप्त न होने के कारण विरह की अवस्था का मनोशास्त्रीय रूप है।

विरह भावना की तीव्रता प्रपत्ति भक्ति की सर्वोच्च अवस्था है।

"माता-पिता की सेवा"

पाश्चात्य सभ्यता की दौड़ में हम "मदर-डे" "फादर-डे" मनाने लगे हैं। इस दिन के लिये विभिन प्रकार के ग्रिटिंग कार्ड बाजार में उपलब्ध होते हैं, फाइव स्टार होटल वाले विभिन्न स्पेशल प्रोग्राम करते हैं। अभी जून में ही "फादर डे" निकला है। मीडिया ने जिस चमक धमक के साथ इसे बढ़ावा दिया तो मेरा मन यह सोचने को मजबूर हो गया कि क्या साल में एक दिन उन्हें गिफ्ट व कार्ड देने मात्र से ही उनका सम्मान पूरा हो जाता है शायद नहीं...

संसार में दो प्रकार का प्रेम होता है सच्चा और स्वार्थ भरा, सच्चा प्रेम करने वाले कष्ट सहते है और बदले में कुछ नहीं चाहते, किन्तु स्वार्थ भरा प्रेम करने वाले स्वार्थ सिद्धि तक ही प्रेम करते हैं। माता-पिता का प्रेम सच्चे प्रेम की श्रेणी में आता है। बच्चे के गर्भ में आते ही माता उसकी सुरक्षा में लग जाती है, वह बालक को पेट में रखती है, पैदा होने के बाद उसके मल-मूत्र से भी घृणा नहीं करती, माता स्वयं गीले में सोती है, बच्चे को सूखे में सुलाती है, यदि घर में अन्न की कमी है तो माता स्वयं भूखी रहकर बच्चे का पेट भरती है। पिता भी बच्चे के भरण-पोषण के लिये सभी प्रकार के कष्ट सहता है, वह अच्छी से अच्छी शिक्षा बच्चों को देना चाहता है, हर पिता अपना पेट काटकर बच्चे की पढ़ाई के लिये पैसे इकट्ठे करता हैं।

जब माता-पिता सब प्रकार के कष्टों को सहकर सन्तान का पालन-पोषण करते है तब पुत्र-पुत्री का भी यह कर्तव्य है कि वह माता-पिता की सेवा करे।

माता-पिता की सबसे बड़ी सेवा यही है कि वे उनकी आज्ञा माने। श्रीराम का हम आदर इसलिये ही करते है कि वह माता-पिता की आज्ञा मानते थे। माता-पिता की आज्ञा से ही श्रीराम सब कुछ छोड़कर वन को चले गये। भीष्म पितामह ने पिता को प्रसन्न करने के लिए आजीवन कुंवारे रहने की प्रतिज्ञा कर ली। श्रवणकुमार की माता पिता भक्ति को कौन नहीं जानता। ये उदाहरण हमें यह शिक्षा देते हैं कि हमें माता-पिता की सेवा करनी चाहिये उनकी आज्ञा माननी चाहिये। जो सन्तान माता-पिता की सेवा करती है। वह वन्दनीय होती है। तुलसीदासजी ने भी कहा है-

"सुनु जननी सोई सुत बड़ भागी,
जो पितु मातु वचन अनुरागी।"

सन्तान के लिये माता-पिता के समान कोई भी श्रेष्ठ व प्रत्यक्ष देवता नहीं है। अतः सन्तान को सभी प्रकार से माता-पिता की सेवा करनी चाहिये, इसी में सन्तान का कल्याण है। स्वर्ग में जो देवी-देवता है वह शरीर प्रदान करने वाले नहीं है, जबकि शरीर ही जीव के स्वर्ग व मोक्ष का एक मात्र साधन है। जिसकी कृपा से शरीर, धन, सन्तान, स्त्री सभी कुछ मिलता है, उनसे बढ़कर पूज्यतम भला कौन हो सकता है?

अतः नयी पीढ़ी से मेरा अनुरोध है कि वह पाश्चात्य आंधी की दौड़ में सिर्फ साल में एक ही दिन माता-पिता को कार्ड व गिफ्ट न दें बल्कि रोज ही उनको सम्मान दें उनकी सेवा करें तभी "मदर डे" व "फादर डे" की उपयोगिता होगी।

प्रेषिका- श्रीमती राज खंडेलवाल, मथुरा

आवश्यक सूचना

नारी की आबरू कैसे बचे

एस.पी.गुप्ता, सामोद

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार बलात्कार के 75 प्रतिशत मामले जिन सात राज्यों में सबसे अधिक होते हैं,उनमें राजस्थान भी एक है। देखा जाय तो राजस्थान लड़कियों व महिलाओं के अपहरण के मामले में देशभर में उत्तरप्रदेश के बाद दूसरे नम्बर पर है। प्रति लाख आबादी पर महिला अत्याचारों की घटनाओं के आंकड़ों में राजस्थान देशभर में पहले नम्बर पर है।

गत दो अप्रेल को एस.एम.एस. अस्पताल में इलाज कराने आई एक महिला के साथ वार्ड ब्वाय द्वारा अत्याचार, तीन अप्रेल को दो किशोरियों से सामूहिक और एक गर्भवती महिला से बलात्कार। चार अप्रेल को ढाबा चलाने वाली महिला से बलात्कार। तीन दिन में 5 बलात्कार। जरा सोंचे कि आखिर आज के इंसान को क्या हो गया है। कहीं भी किसी भी महिला की अस्मत सुरक्षित नहीं है।

माना कि महिलाओं को सुरक्षा देने का दायित्व पूरे समाज का है, लेकिन महिला स्वयं सजग और सावधान रहकर भी इन खतरों से बच सकती है। इसके लिए यह जरूरी है कि वह यह जानें कि इन दुष्टों से बचने के लिए उसे क्या-2 सावधानियाँ बरतनी चाहिए।यदि वह ऐसा नहीं करती है तो यह माना जायेगा कि वह भी उस व्यक्ति की भाँति दोषी है जो आम रास्तें पर अपना कीमती माल रखकर निर्भय घूमता है और माल गायब होने पर हाय तौबा मचाता है।

बलात्कार क्यों बढ़ रहे हैं?

यह बात किसी भी प्रबुद्ध व्यक्ति से छिपी हुई नहीं है कि बलात्कार को बढ़ाने में टी.वी. मोबाइल, इन्टरनेट डिश, गंदी अश्लील ब्लू फिल्में और गंदा साहित्य अपना भरपूर रोल अदा कर रहे है किन्तु महिला जगत ने कुछ ऐसे कारण भी उत्पन्न कर दिये है जिनसे असामाजिक तत्वों को नारी उत्पीड़न का प्रोत्साहन मिलता है। हमें इन बिन्दुओं पर गहराई से विचार कर उन के हल पर गौर करना होगा।

बलात्कारी कौन है ?

यह जरूरी नहीं है कि बलात्कारी कोई अपरिचित ही हो। वह कोई खास दोस्त, ब्वाय फ्रेंड,सहपाठी, रिश्तेदार अथवा साथी कर्मचारी भी हो सकता है। यह भी कोई आवश्यक नहीं है कि कोई क्रूर, हिंसक, ताकतवर या भयानक चेहरे वाला व्यक्ति ही बलात्कारी हो। देखने में आता है कि जो बेहद शांत, सौम्य और शिष्ट स्वभाव का हो और नैतिक सदाचार की तर्कपूर्ण बातें करता हो, वह भी समय आने पर अपना घिनौना रूप प्रकट कर देता है। शराफत के आवरण में कौन भेडिया छिपा है , इसे कोई सहज ही नहीं जान सकता। यह सोचना भी पूर्णतया सही नहीं है कि पत्नी सुख से वंचित रहने वाला व्यक्ति ही अधिकतर बलात्कार करता है। सच तो यह है कि शादीशुदा, सम्भ्रान्त परिवार के वे लोग भी जिनकी पत्नी स्वस्थ, सुन्दर और शिष्ट है, बलात्कार में लिप्त होते पाये गये है। ऐसे में किसी भी महिला को निम्नांकित बिन्दुओं पर गहराई से विचार कर अपने को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करना चाहिए :-

1. नवीन वस्त्र आभूषण पहनना और फैशन पर चलना कोई बुरी बात नहीं है, परन्तु बिगड़ी का नाम फैशन मानकर उसका अनुकरण करना नितान्त अशोभनीय है। फ़ैशन का यह अर्थ नहीं कि आधा नंगा रहा जाय और कामांगों का प्रदर्शन किया जाय। बीस-बाइस वर्ष तक की नव युवतियां जो जीन्स टापर

या ऐसे वस्त्र पहनती है जिनसे उनके अंगों का खुला प्रदर्शन होता है। ऐसे में आवारा युवक इन पर अनेक प्रकार की फब्तियाँ कसते है और उनको प्रताडित करने को बाध्य हो जाते है। आजकल टी.वी. दृश्यों का अनुसरण करने वाली भले घर की युवतियाँ भी अपने घर-परिवार और समाज की मर्यादा को ताक में रखकर देखा-देखी करने में अपनी शान समझती है। जब कोई हादसा घट जाता है तो वे और उनके मां-बाप जमाने व सरकार पर दोषारोपण करने लगते है। इसलिए महिलाओं को प्रारम्भ से ही विवेकपूर्ण मर्यादा में रहना चाहिए।

2. आजकल बॉय फ्रेंड-गर्ल फ्रेंड बनाने का एक नया प्रचलन पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण से चल पडा है। इसे आजकल स्टेटस सिम्बुल भी माना जा रहा है। ऐसे लोग कुछ अपवादों को छोड़कर अक्सर एकान्त में बुलाते है, मिलते है और अपने आपको अच्छा साबित करने की कोशिश करते है, लेकिन उनकी नियत सही नहीं होती। यह जिनके साथ रेप करते है उसे जान से नहीं मारते वरन चंगुल में फंसाकर प्रताडित करते रहते है। अतः बिना सोचे समझे जवानी के नशे में किसी को भी अनुचित लिफ्ट देना खतरे से खाली नहीं है।

3. कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते है जो सामाजिक और व्यक्तिगत बंधनो से दूर होते है। इनकी नजर में बलात्कार मात्र एक फैंटसी होता है। इनसे बचने हेतु प्रत्येक महिला को जूडे कराटे से प्रशिक्षित होना और अपने साथ गुप्त शस्त्र रखना चाहिए। ऐसे लोग पीछा करने में अपनी शान समझते है और पकडे जाने पर व पिट जाने पर उन्हें कोई मलाल नहीं होता। इनमें कुछ प्रतिशोधी भी होते है।

4. प्रत्येक महिला को विश्वासपूर्वक चलना चाहिए किसी को भी यह प्रतीत न हो कि वह डरी हुई है। शालीन परिधान पहनने चाहिए। अपने हाव-भाव व बोलचाल का तौर तरीका ऐसा रखे कि किसी को आगे बढ़ने का मौका ही न मिले।

5. किसी भी अजनबी से लिफ्ट न ले। भावनात्मक नियंत्रण में रहे और पुरूषों के समूह को नजर अंदाज करे।

6. हमेशा खुली और पब्लिक प्लेस में से ही आवे-जावें। अकेले आने जाने से बचें। दुराव-छिपाव में भय है। अतः जीवन खुली पुस्तक के रूप में रखें।

सरकार की ढील

राजस्थान में महिलाओं की असुरक्षा का अंदाजा इन आंकड़ों से लगाया जा सकता है कि हर आठ घंटे में एक बलात्कार हो जाता है। चौंकाने वाली बात तो यह है कि भारत में लगभग 70 रेप के मामलों में केवल एक ही दर्ज होता है।

सरकारी कानून भी लचर है। सामूहिक बलात्कार करने वालों के पकड़े जाने पर उनके जनेन्द्रिय को विलग करने का प्रावधान हो तो लोग सहज ही ऐसा कुकृत्य नहीं कर सकेंगे। कोई महिला यदि बलात्कार का झूठा केस लगावे तो उसे कठोर दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु ऐसे कठोर कानून इसलिए नहीं बनाये जाते-क्योंकि अधिकांश अपराधी पुलिस के उच्चाधिकारियों व उच्च धराने के परिवारों से सम्बन्धित पाये जाते हैं।

यह कैसा हुड़दंग-

कुछ वर्षों से देखने में आया है कि बारात के जुलूस के साथ भौंडा नृत्य करने वाले युवक दुल्हा दुल्हन के लिए बने स्टेज पर पहुँचकर ढोल और ताशे के साथ बहुत देर तक उछल-कूद अंग-प्रदर्शन करते रहते है।

आजकल इस बेशर्मी के भद्दे प्रदर्शन मे युवतियों और महिलाओं ने अपना भरपूर सहयोग देना शुरू कर दिया है। वे परिचित, अपरिचित, अन्यान्य मित्रों, रिश्तेदारों के साथ हाथों में हाथ लेकर बेखौफ उछल

कूद और अंग प्रदर्शन करती हुई अश्लील भाव-भंगिमाओं को अंजाम देती हुई घंटों नाचती रहती है। उन्हें देखकर लगता है कि मानों वे उन पेशेवर नृत्यांगनाओं और वेश्याओं को भी मात करने पर तुली हुई है। यह हमारे समाज का घोर पतन है।

सैंकड़ों लोगों के बीच में वे यह सब कुछ करती रहती है और हम मूक दर्शक बने उन्हें निहारते रहते हैं। लज्जा नारी का आभूषण है लज्जा विहीन नारी, नारी नहीं चुडैल से भी बदतर है।

आधुनिक शिक्षित और धनाढ्य परिवारों की नारियाँ ऐसा करने में अपने आप को बहुत होशियार और धन्य समझती है। अतः सार की बात तो इतनी है कि जब तक महिला स्वयं अपनी इज्जत आबरू बचाने पर ध्यान नहीं देगी तब तक सरकार, पुलिस और समाज उसे सुरक्षा नहीं दे सकते।

सम्पादक मण्डल की बैठक में लिये गये महत्वपूर्ण निर्णयः समाज के बन्धुओं के लिये विचार हेतु

दिनांक 9 जुलाई, 2005 को खंडेलवाल महासभा पत्रिका सम्पादक मण्डल की एक मिटिंग का आयोजन महासभा कार्यालय, गंगा मन्दिर, जयपुर पर किया गया जिसमें प्रधान सम्पादक सन्तोष रावत, प्रबन्ध सम्पादक सत्यनारायण बाजरगान संयुक्तमंत्री रामरतन घीया एवं कार्यालय के रामप्रसाद दुसादं उपस्थिति हुये। मिटिंग के दौरान विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श कर सर्वसम्मति से निर्णय लिये गये कि-

महासभा पत्रिका के प्रकाशन को सभी प्रकार से सुन्दर व आकर्षक बनाने के साथ ही पृष्ठ संख्या शीघ्र ही बढ़ाकर 64 की जावे, मूल्य नहीं बढ़ाया जाये और प्रसार संख्या को बढ़ाने का प्रयत्न किया जाये। इसके लिये समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का सहयोग लिया जाये। बढ़ने वाले खर्च को समाज के बन्धुओं से अधिक से अधिक विज्ञापन प्राप्त कर पूरा करने का प्रयत्न किया जाये, किसी भी स्थिति में भार महासभा पर न पड़े।

वर्तमान में पत्रिका के 40 पृष्ठ छप रहे हैं और जब तक 64 पृष्ठ करने की व्यवस्था हो उसमें निम्न प्रकार की सामग्री छापने का प्रयत्न किया जाए।

2. पृष्ठ प्रथम पृष्ठ सम्पादक मण्ल प्रकाशन व दूसरा पृष्ठ सम्पादकीय समाचार आदि।

6 पृष्ठ कार्यालय, महासभा आदि के समाचार सूचनाएं आदि।

4 पृष्ठ संस्थाओं के समाचार

4 पृष्ठ विवाह योग्य लड़के लड़कियों का विवरण

4 पृष्ठ कोई भी शिक्षा प्रद कहानी, लेख आदि

4 पृष्ठ धार्मिक विचार व लेख आदि

4 पृष्ठ बच्चों के मुख से अर्थात लेख, चुटकले, बाल कहानी आदि

4 पृष्ठ महिलाओं से सम्बन्धित लेख, विचार, समाचार

2 पृष्ठ रोजगार समाचार, आवश्यकता हैं आदि सूचनाएँ

4 पृष्ठ देश-विदेश के विभिन्न समाचार

4 पृष्ठ दान-दाताओं की सूची।

उपरोक्त में यथानुसार प्राप्त सामग्री के आधार पर बढ़ोतरी की जा सकेगी।

यह भी निर्णय लिया गया कि पदाधिकारियों से बात कर, यदि संभव हो सके तो पत्रिका मद में शेष रही राशि की एफ.डी. करा दी जाये।

इसके साथ ही जिन सदस्यों के चन्दे समाप्त हो गये हैं। उनसे 41 रू. का मनिआर्डर वार्षिक चन्दे का अथवा 301 रू. का आजीवन सदस्यता चन्दा भेजने का अनुरोध किया जाये। एक अपील पत्रिका में उन बन्धुओं से भी की जाये जिन्हें पत्रिका नहीं मिल रही है? यदि पते में बदलाव हो तो वे बन्धु अपना नया पता कार्यालय को तुरन्त भेज कर सहयोग प्रदान करें।

सम्पादक मण्डल

ज्ञानयज्ञ इस युग का सबसे बड़ा परोपकार-परमार्थ

सेवा धर्म सबसे बड़ा धर्म है। परोपकार-परमार्थ का जीवनक्रम में जितना समावेश होगा, उतना ही चरित्र उज्जवल रहेगा, सदगुण बढ़ेंगे और आत्मा को संतोष मिलेगा। जो अपने स्वार्थ के लिए ही जिया, आपा-धापी में ही लगा रहा, उसने भले ही दौलत इकट्ठी कर ली हो, भले ही ऐश-आराम से दिन काट लिए हों फिर भी मानवीय आदर्शो की कसौटी पर कसने के उपरांत यही कहा जाएगा कि उसका जीवन व्यर्थ ही चला गया।

भारतीय संस्कृति में परोपकाराय इदं शरीरम् जैसे सूत्रों में परोपकार की बड़ी महिमा बताई गई है। परोपकार का आशय है कि किसी का भला करना अथवा हित करना। परोपकार के बहुत से प्रकार और बहुत से रूप हो सकते है। जिन्हें प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में बाँटा भी जा सकता है। इस विभाजन को समझने के लिए तृतीय श्रेणी से चलिए। तृतीय श्रेणी का परोपकार वह होता हैं, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति का सामयिक हित होता है, जैसे किसी भूखे को भोजन करा देना, किसी रोगी अथवा आहत को अस्पताल पहुँचा देना, किसी याचक को पैसा दे देना, शीत पीड़ित को वस्त्र अथवा खोए को उसके गंतव्य स्थान तक पहुँचा देने की सहायता कर देना आदि तृतीय श्रेणी का परोपकार होता है।

द्वितीय श्रेणी के परोपकार उनको कहा जाता है, जिससे किसी का दूरगामी हित होता है जैसे किसी की नौकरी लगा देना, उसकी जीविका का प्रबंध करा देना, किसी को घातक रोगों से मुक्ति दिना देना, किन्हीं व्यक्तियों अथवा परिवारों का वैमनस्य मिटा देना, किसी को निराश अथवा निरूत्साह के अंधकार से निकाल देना अथवा किन्हीं की स्थाई शत्रुता को मिटा देना आदि सत्कर्म द्वितीय श्रेणी के परोपकार माने गए हैं।

जिन उपकारों से मनुष्य का स्थाई हित होता है, वह अपने जीवन के विकास और उसकी समस्याओं का हल करने की क्षमता पाता है, वह उपकार प्रथम श्रेणी का माना जाएगा। मनुष्य को इस योग्य बनने में सहायता देना कि उसे किंसी पर निर्भर न रहना पड़े, किसी का आश्रय न देखना पड़े, किसी का सहारा लेकर न खड़ा होना पड़े, निस्संदेह प्रथम श्रेणी के परोपकार हैं। इस श्रेणी में वे सारे उपकार आ जाते हैं, जिनसे किसी में जीवन जीने की योग्यताओं का विकास होता है।

अब प्रश्न यह है कि जो सामान्य व्यक्ति हैं जो साधन संपन्न और धनवान है, तो वे क्या जीवन भर प्रथम श्रेणी का परोपकार कर सकने से वंचित ही रह जायेंगे? नहीं ऐसा नहीं। परोपकार उपकारों के अतिरिक्त प्रथम श्रेणी के उपकारों के और भी प्रकार है, जिनका निर्वाह कोई भी सामान्य से सामान्य व्यक्ति कर सकता है।वे उपकार है ज्ञान-दान और सद्गुण अथवा चरित्र-निर्माण।

भारतीय ऋषि-मुनियों को सर्वश्रेष्ठ उपकारी माने जाने का एकमात्र कारण यही है कि उन्होंने अज्ञान के अंधकार में भटकती हुई मानवता को ज्ञान का आलोक दिया। समाज के प्रति उनका यह बहुत बड़ा उपकार था। ज्ञान का आलोक पाया हुआ मनुष्य संसार के सारे दुखों से छूट जाता है। इसके लिए उसे किसी का मुखापेक्षी नहीं बनना पड़ता और न किसी का सहारा खोजना पड़ता है। इसीलिए ज्ञान-दान को प्रथम श्रेणी का उपकार माना गया है।

ज्ञानदान से बढ़कर संसार में कोई दान नहीं जिसे

यह प्राप्त होता है, उसका जीवन कृतार्थ हो जाता है। धन अथवा साधन देकर किसी का उतना उपकार नहीं किया जा सकता, जितना कि ज्ञान देकर। किसी से धन की सहायता पाकर कोई मनुष्य, माना अपना विकास कर सकता है, कार-रोजगार बढ़ा सकता है। तब भी ज्ञान के अभाव में धन उसको वह वांछित सुख नहीं दे सकता, जिसकी मानव जीवन में अपेक्षा की जाती है। वह सुख, वह शाश्वत सुख तो केवल ज्ञान से ही प्राप्त हो सकता है। धन की सहायता की अपेक्षा ज्ञान की सहायता कहीं श्रेष्ठ है। ज्ञानोपकार से बढ़कर संसार को कोई अन्य परोपकार है ही नहीं।

सब दुखों का कारण–अज्ञान :

विवेकशील व्यक्ति जानते हैं कि संसार के समस्त दुखों का, व्यक्ति के समस्त कष्टों का, समाज के समस्त संकटों का एकमात्र कारण विचारों का विकृत हो जाना ही है। आज यदि दुखों के स्थान पर सुखों की स्थापना अभीष्ट हो तो उसका उपाय एक ही है- ''सही ढंग से सोचने की कला सिखाना।'' क्या अमीर, क्या गरीब, क्या शिक्षित, क्या अशिक्षित, रोटी कमाने की विधि किसी तरह सीख गए हैं, वस्तुतः वे जीवन जीने की कला, सही विचार करने की रीति-नीति से सर्वथा अपरिचित ही प्रतीत होते हैं। यदि वे इस कला से परिचित रहे होते तो शारीरिक ही नहीं, मानसिक और आंतरिक दृष्टि से भी वे सुसंपन्न एवं समुन्नत दिखाई पड़ते। उनके संपर्क में जो भी आता वह सुख-शांति का अनुभव करता और उस सानिध्य की सराहना करते-करते न थकता। फूल ही सुगंधित नहीं होता, मनुष्य के सद्गुण भी चिरस्थाइ और सच्ची सुगंध फैलाते हैं। चंद्रमा ही सुंदर नहीं है- उज्जवल चरित्र का सौंदर्य उससे बड़ा है। इसलिए जिसे सही सोचने वाला, सही करने वाला बना दिया गया, उसके साथ असीम उपकार किया गया मानना चाहिए और जो इस पुण्य-परमार्थ को कर सके उसकी गणना धरती के देवताओं में करनी चाहिए। भुसूर ब्राह्मण को कहते हैं। ब्राह्मण अर्थात् सदज्ञान का प्रसार के लिए, जन जागरण के लिए जीवन उत्सर्ग करने वाला, टंट घंट कर अपना उल्लू सीधा करने वाला प्रपंच परायण संस्कृतज्ञ नहीं।

सद्ज्ञान ही वह अमृत है, जिसकी कुछ बूंदे पाकर मृतकों में जीवन संचार होता है। ऐसे अमृत को जो जनसाधारण तक पहुँचा सके, उसके पुण्य परमार्थ ही महत्ता अकूत है। नारद देवर्षि इसलिए थे कि तप-साधना द्वारा स्वर्ग-मुक्ति की आकांक्षा न करके द्वार-द्वार पर सदज्ञान का अमृत छिड़कते हुए निरंतर भ्रमण करते रहते थे। नारद की सीधी पहुँच भगवान तक थी। वे क्षीरसागर में सोते हुए भगवान को कभी भी जा जगाते थे, यह अधिकार और किसी को मिला नहीं था। भगवान को इतना प्रिय और कोई ऋषि देवता नहीं था।

कारण भी स्पष्ट है। भगवान ज्ञान रूप हैं। जहाँ जितना सद्ज्ञान है, समझना चाहिए वहां उतना भगवान है। ज्ञान परायण व्यक्ति वस्तुतः भगवान् में रमण करता है और उन्हीं में लीनं माना जाता है। नारद जी की स्थिति ऐसी ही थी। वे मानते थे कि दुखी प्राणियों का कल्याण एक मात्र सद्ज्ञान से ही हो सकता है। यह संसार स्वर्ग के रूप में ज्ञान द्वारा ही विकसित हो सकता है, इसलिए निरंतर प्राणियों पर ज्ञान बरसना चाहिए। ऐसे उच्च कोटि के परमार्थ से बढ़कर भगवान की प्रसन्नता का आधार और कुछ हो ही नहीं सकता।

संकोच छोड़ें, आगे बढ़ें –

अज्ञानांधकार में भटकते मानव समाज को प्रकाश

देने के लिए दीपक की तरह अपने को जलाने वाले भावनाशील लोग आगे बढ़ें तो युग बदले। शांति के लिए कुछ ही जीवंत अपना जीवन समर्पण कर सकें,तो काम चले।ऐश आराम की जिंदगी से सपने संजोने में सब लोग लगे हैं।

कुछ ऐसे भी ''पागल'' निकलने चाहिए जो तक ढंकने और पेट भरने की आवश्यकता पूर्ति को पर्याप्त मानकर संसार के भावनात्मक उत्कर्ष के लिए अपना जीवन होम कर सकें। युग पुरूष, महाकाल ऐसे भावनाशील नर-नारियों को आँखे फाड़-फाड़ कर खोजता, पुकारता और बुलाता है, पर सन्नाटे को चीरती हुई कोई आवाज नहीं आती, यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है? धर्म और अध्यात्म का ढोंग बनाए लाखों लोग बैठे है पर जनता के लिए वस्तुतः कुछ करने की जिनमें भावना उमड़ती हो ऐसे लोग खोजे नही मिल रहे हैं। भारतमाता के उस दुर्भाग्य के कलंक को पलट देने के लिए कुछ बलिदानियों की आवश्यकता है। ऐसे बलिदानी जो सिर कटाने के लिए नहीं, जन जागरण का अलख जगाने के लिए तिल-तिल अपने आपकी बलि देने के लिएं उल्लासपूर्वक आगे बढ़ आएँ।

संतों की परंपरा में 'अलख जगाना' एक बहुत बड़ा अध्यात्म साधन है। गोरखपंथी तथा दूसरे साधु घर-घर जाकर अलख जगाते थे, उद्‌बोधन करते थे। मुसलमान फकीर भी बड़े तड़के गली-मोहल्लों में उच्च स्वर से जन जागरण के गीत गाया करते थे, पर अब वे परंपराएं लुप्त होती चली जा रही है। मनुष्य स्वार्थी और आरामतलब होता जाता है। अपना अहंकार घटाना नहीं बढ़ाना चाहता है।

किसी के दरवाजे पर हम क्यों जाएँ? इससे अपने हेटी और बेइज्जती लगती है। शान तो रहनी ही चाहिए। बड़प्पन की परिभाषा यह हो गई है कि वह किसी के यहाँ बिना बुलाए या कम आग्रह पर पहुँच जाने में घटता और आग्रह बहुत खुशामद बहुत सम्मान और बहुत आदर मिलने पर बढ़ता है। ऐसा अहंकार पूरा हो सके तो तथाकथित सिद्धांतवादी और बड़े आदमी भी ज्ञान सुधार के लिए तैयार हो सकते है। पर ऐसा संभव कैसे हो? जिस सद्ज्ञान के लिए जनता को कोई परिचय नहीं, कोई रूचि नहीं, उत्साह नहीं तो उसके लिए किसी को बुलाने का आग्रह कौन करे? और वैसा आग्रह हो तो जाए कौन? अहंकार का पहाड़ आगे आ रहा है। बेइज्जती, संकोच पैरों में बेड़ी डाले हैं। वे मीराएँ नहीं मिलीं जो पैरों में घुँघरू बाँधकर, हाथों में एकतारा लेकर अपने भगवान के गुणानुवाद चौराहे-चौराहे पर सुनाएँ। वे सूर, कबीर भी दृष्टिगोचर नहीं होते जो शोक ग्रस्त जनता की व्यथा हरने के लिए अश्विनीकुमारों की तरह उसका दरवाजा खटखटाने के लिए करूण आर्द्र बिना बुलाए जा पहुँचे। न जाने ऐसे उदार नर-नारी सद्ज्ञान का अमृत बरसाने के लिए कब वापस मेघों की तरह इस विश्व आकाश के प्रांगण में विचरण करने के लिए निकलेंगे? यदि यह कार्य पैसे के नौकरों से हो सका होता तो कराया भी जा सकता था। महात्मा गाँधी को खादी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यकर्ताओं की आवश्यकता अनुभव हुई तो वेतन भोगियों से यह कार्य संभव नहीं हुआ। जब पं. नेहरू, सरदार पटेल और विनोबा भावे जैसे मूर्धन्य व्यक्तियों ने यह कार्य सँभाला और ढकेलों पर खादी गली-गली बेची गई, तो ही खादी का इतना प्रचार हुआ।

इसी प्रकार जब समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति युग साहित्य को लेकर घर-घर पढ़ाने के लिए निकलेंगे, तब ही ज्ञानयज्ञ सफल होगा। मूर्धन्यों, मनीषियों, प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त परिजनों को इस कार्य हेतु आगे आना ही चाहिए।

सौजन्य : युग चेतना साहित्य-23

समाज सेवा

रामानन्द खंडेलवाल, जयपुर

यह हमारा परम सौभाग्य है कि पुण्य भूमि भारत में जन्म लेने का गौरव प्राप्त हुआ है क्योंकि देवता भी भारत भूमि में जन्म लेने को तरसते है। भगवान की असीम कृपा है। यहां की संस्कृति की यह विशेषता है कि यहां जन्म लेने वाला अपनी मातृभूमि को माता के समान एवं यहां के सभी निवासियों को भ्राता एवं भगिनी के समान मानता है।

मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है कि सर्वप्रथम अपने परिवार का भरणपोषण करे अपनी गृहस्थी को सुचारू रूप से चलावे। माता-पिता, गुरूजनों व बड़ों का सम्मान करे औरअपने से छोटों व बाल बच्चों को स्नेह प्रदान करे। बच्चों को सुसंस्कारित करते हुए उनको सुयोग्य शिक्षा दिलावे। बड़े होने पर उनकी आजीविका की व्यवस्था करे और तत्पश्चात योग्य वर वधू देखकर पाणिग्रहण संस्कार करावे। इतना सब करने पर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री न समझें। उसके पश्चात् उसका कर्तव्य है कि जहां जन्म लिया है उस मातृभूमि व समाज की सेवा करना। जिन बन्धुओं के बीच वह रहता है उनके सुख दुख में भागीदार होना समाज को संगठित कर उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का प्रयास करना परम आवश्यक है। समाज सेवा निस्वार्थ भाव से बिना किसी फ़ल की इच्छा रखते हुए करना चाहिये। कवि की ये पंक्तियां प्रेरणादायी है :-

''जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नही वह पत्थर है जिसमें स्वजाति का प्यार नहीं।''

समाज सेवा तीन प्रकार से होती है तन, मन व धन से। आज के अर्थ प्रधान युग में बिना धन के कोई भी सामाजिक संगठन कार्य नहीं कर सकता। कुछ बन्धु धन देकर समाज का सहयोग व सेवा करते हैं, किन्तु उनके पास समय का अभाव होने से बाकी दोनों प्रकार से सेवा नहीं कर पाते। वे स्वयं अधिक धन नहीं दे सकते किन्तु समाज बन्धुओं से अधिक से अधिक धन संग्रह कर अनेक समाज बन्धुओं को जोड़ते हैं । समाज सेवा के लिये सेवा, समर्पण, सहयोग, सहिष्णुता, समरसता, सहृदयता आदि गुणों की आवश्यकता है। निस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पित व्यक्ति ही समाज की सेवा कर सकता है। जिसका चरित्र निर्मल हो, जिसकी स्वच्छ छवि हो, जो अनुशासन प्रिय हो, जो व्यवहार कुशल हो, जिसके जीवन में सरलता, सज्जनता, विनम्रता, वाणी में मधुरता, आचरण में शुद्धता और जीवन में पारदर्शिता हो, जो सबको साथ लेकर चलने की क्षमता रखता हो ऐसे गुण सम्पन्न व्यक्ति ही समाज सेवा करने में समर्थ हो सकते है।

किन्तु इसके विपरीत कुछ लोग समाज सेवा का अलग ही फार्मूला अपनाते है। धन बल, भुजबल, चापलूसी आदि के द्वारा येन केन प्रकारेण पद हथियाना, मंच पर लच्छेदार भाषण देना, फोटो खिचवाना, समाचार पत्रों में वक्तव्य छपवाना, अनैतिक तरीकों से आर्थिक लाभ प्राप्त करना, समाज को संगठित करने के स्थान पर छोटे गुटों में विभक्त करना, अपनी स्तुति स्वयं करना व पर निन्दा करना ही समाज सेवा मानते है वह गलत है तथा यह समाज की सेवा नही है यह समाज के लिये अहितकर है जिसे बिल्कुल ही प्रश्रय नहीं दिया जाना चाहिये। समाज सेवक का सबसे बड़ा धर्म है परोपकार। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई पर पीडा सम नहीं अधभाई। समाज की सेवा करने वाले व्यक्ति को आलोचना से नहीं घबराना चाहिये। पहले आत्मालोचन करे कि कहीं मैं गलती तो नहीं कर रहा। यदि उसे कहीं गलती लगे तो सुधार करना चाहिये। अन्यथा अपना सेवा कार्य चालू रखना चाहिये। आईए हम सब मिलकर अपने समाज को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने हेतु एक जुट होकर प्रयास करें।

उदयपुर अधिवेशन- जैसा मैंने देखा

अखिल भारतीय खंडेलवाल वैश्य महासभा का 30वां अधिवेशन झीलों की सुरम्य नगरी उदयपुर में हुआ। इस अधिवेशन के भव्य आयोजन से प्रत्येक स्वजातीय बंधु को कुछ अनुभव हुआ, अहसास हुआ, सोचने समझने का संदेश मिला।

इस झीलों की नगरी के स्वजातीय परिवारों की आत्मीयता, अपनत्व अपने शहर में आये बाहरी स्वजातीय बंधु का अतिथियों के रूप में स्वागत करने की आतुरता, कर्तव्य परायणता, व्यवहारों की मधुरता देखने को मिली जो कि अविस्मरणीय रहेगी। अतिथियों के ठहरने की मधुरता देखने को मिली जो कि अविस्मरणीय रहेगी। अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, समारोह स्थल की व्यवस्था, सूर्यदेव के प्रकोप से तप्त शहर में शीतल, शुद्ध पेयजल व्यवस्था काफी सराहनीय रही। समय पर चाय नाश्ता, गरम व स्वादिष्ट भोजन, उदयपुर के स्वजाति बन्धुओं की मेहमान नवाजी की अनुपम व बेमिशाल यादें अपने मन में संजोये हुये, भाव विभोर होकर प्रत्येक सजातीय बंधु अपने को धन्य मान रहा था।

अपने विचार व्यक्त करने में या दूसरों के उद्गार सुनने को लालायित हो रहे थे। इसके साथ ही नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कालीचरणदास जी कोड़िया की सोम्य छवि व मधुरवाणी, श्रीनाथबाबा की असीम कृपा पर आस्थावान व्यक्ति द्वारा कार्यक्रम के संचालन में मधुरता एवं गरिमा का आभास करा रही थी। अथक परिश्रम, उदारहृदयता विनयता एवं विनम्रता, इन सबके लिये उदयपुर स्वजाति समाज व अध्यक्षजी साधुवाद के पात्र रहेंगे।

इस सरस वातावरण में अचानक ही नाटकीय मोड आया, वातावरण तनावपूर्ण व भवायह हो गया। दर्शक ठगे से रह गये उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या माजरा है। सभी जिज्ञासु की तरह एक दूसरेसे पूछ रहे थे कि यह क्या हो रहा है? झगड़े फसाद की स्थिति क्यों बन रही है।

समाज सेवा के लिये तत्पर तथा प्रेरित होकर कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में चुनने को आतुर उम्मीदवार थे। कहीं-कहीं तो सदस्य निर्विरोध चुनकर आ गये थे। लेकिन कुछ स्थानों पर उम्मीदवारों की संख्या अधिक होने से चुनाव कराना आवश्यक हो गया था। किन्तु चुनाव का सामना किये बिना येन केन- प्रकारेण जो कार्यकारिणी के सदस्य बनाना चाहते थे ऐसे लोगों द्वारा वातावरण को अशांत व भयावह बना दिया गया तथा चुनाव टालने का भरसक प्रयास किया गया। अगर चुनाव कराये जाते तो स्थिति विकट हो जाती।

अध्यक्षजी एवं समाज के प्रबुद्ध वर्ग द्वारा इस माहौल को शान्त करने तथा कलह एवं तनाव को टालने हेतु विचार विमर्श किया गया और विवादित स्थानों के सभी उम्मीदवारों ने अपने समस्त अधिकार अध्यक्ष जी को सौंप दिये। वातावरण में जो तनाव था, हताशा थी, कुछ अनहोनी का भय था, ऐसी कालीघटा छट गई फिर से वातावरण सौहार्द्रपूर्ण होकर गंगामाता की जयकार से गुंजायमान हो गया।

कार्यकारिणी के सदस्यों के चुनाव होते तो वही चुनकर आते जिनकी समाज में पेठ होती, सामाजिक कार्यों में रूझान होता तथा महासभा के कार्यक्रम में पूर्णकालीन समय देने में समर्थ होते। दूध का दूध और पानी का पानी होता,, मतदाता ऐसे ही व्यक्तियों को निश्चित ही विजय का सेहरा बांधते।

किन्तु चुनाव नहीं होने से अधिकांश योग्य एवं पात्र बन्धु महासभा को अपनी सेवायें देने से वंचित

शेष पृष्ठ 36 पर

धूम्रपान निषेध

रामसहाय, खेरली (अलवर)

अनादि काल से मानव किसी न किसी व्यसन से ग्रसित रहा है। इनमें कुछ व्यसन मानव जीवन के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मानव दुर्व्यसनों से ग्रसित होकर अपनी दुर्गति, अस्वास्थ्यकर स्थिति एवं असमय में अपनी मृत्यु को स्वयं आमंत्रित करता है।

इन दुर्व्यसनों में स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालने वाला सर्वाधिक तत्व धूम्रपान है। यह कैसी दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना है कि हम धूम्रपान के सेवन को व्यक्ति के उच्च जीवन स्तर का मानदण्ड मान बैठे है। क्या हमारे लिए यह अभीष्ट है कि हम धूम्रपान के सेवन द्वारा विनाश को आमंत्रित करें।

तम्बाकू धूम्रपान का प्रमुख आधार है। भारत तम्बाकू उत्पादन के मामले में विश्व का तीसरा बड़ा देश है। विश्व में 125 करोड़ लोग धूम्रपान करते है इनमें से 40% विकासशील देशों में है। तम्बाकू का सेवन करने वाले 33 करोड़ भारतीयों में महिलाओं की संख्या 11 करोड़ है। भारत में लगभग 6.46 लाख किलोग्राम तम्बाकू का सेवन किया जाता है। धूम्रपान करने वालों की संख्या भारत में 15 करोड़ से अधिक है। धूम्रपान करने वालों में 19% सिगरेट पीते है तथा 54% बीड़ी तथा शेष 27% खैनी का इस्तेमाल करते हैं। भारत में तम्बाकू संबंधित बीमारियों से हर वर्ष 10 लाख से अधिक लोगों की मौत होती है यदि इस पर प्रभावी नियंत्रण नहीं लगाया गया तो 2012 तक मौतों की संख्या 30 लाख सालाना तक पहुंच जायेगी जब कि धूम्रपान से प्रतिदिन होने वाली मौतों की संख्या 11 हजार है। तम्बाकू के धुएं में चार हजार ऐसे तत्व होते है जो व्याधियों को बढ़ावा देते है। इनमें से 438 तत्व कैंसर जैसे असाध्य रोग को बढ़ाने वाले होते है।

नवीनतम शोधों से पता चला है कि एक सिगरेट व्यक्ति की जिंदगी के 11 मिनट कम करती है। अर्थात अगर व्यक्ति सिगरेट का पैकिट (20 सिगरेट) पीता है। तो उसकी जिंदगी के 3 घंटे 40 मिनट कम होते है। दूसरे शब्दो में हम कह सकते है कि दो पैकिट सिगरेट प्रति दिन पीने वाले की आयु आठ वर्ष कम हो जाती हैं। यद्यपि सिगरेट तथा तंबाकू के पैकिटों पर वैधानिक चेतावनी भी लिखी होती है कि तंबाकू/धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है लेकिन इस बात की ओर लोगो का ध्यान शायद ही जाता है।

बीड़ी में सिगरेट की तुलना में विषैली गैस दुगुनी होती है जैसे कार्बन मोना ऑक्साइड, सायनायड गैस।

भारत में रोजाना 200 व्यक्ति धूम्रपान करने वालों के पास बैठने से मरते है। भारत में 20 लाख तम्बाकू चबाते है। यहाँ मुख का कैंसर अधिक होता है। 10 में से 7 रोगी कैंसर के होते है जो धूम्रपान या जर्दे का सेवन करते है। हृदय रोग से पीडित रोगियों में से 7 वे होते है जो तम्बाकू का सेवन करते है जो सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले व्यक्तियों से बीस गुना अधिक लोग तम्बाकू, जर्दे का सेवन करने से मरते है। भयंकर अग्नि दुर्घटनाओं का कारण धूम्रपान ही होता है। अपार जन-धन की हानि होती है। तम्बाकू के व्यापार से सरकार को लगभग 5500 करोड़ रूपए वार्षिक राजस्व प्राप्त होता है लेकिन तम्बाकू से पीड़ित रोगियों के इलाज पर उसे

[illegible]500 करोड़ रु. से अधिक खर्च करने पड़ते है। [illegible] दुनियाँ का ऐसा शहर है जहाँ सत्रहवीं शताब्दी में कानून बनाया गया था कि शहर से पांच मील बाहर तक कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नहीं कर सकता।

कनाडा, ब्राजील ऐसे देश है जहां सिगरेट के पैकिट पर धूम्रपान विरोधी चित्र होंगे। ये चित्र सिगरेट पीने वालों को हर कश के साथ उनके स्वास्थ्य को हो रही हानि की याद दिला सके। ब्राजील में धूम्रपान छोडने के इच्छुक व्यक्तियों के मार्गदर्शन हेतु टेलीफोन नंबर भी दिए होते है जहां से उन्हें धूम्रपान छोड़ने के बारे में जानकारी मिल जाती है।

अमेरिका के कैलीफोर्निया शहर में बीडी पीने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। मलेशिया में मुस्लिम नेताओं ने धूम्रपान के विरूद्ध फतवा जारी किया है।

हांगकांग में धूम्रपान केवल स्मोक जोन क्षेत्र में किया जा सकता है। सडकों पर कई जगह फुटपाथ पर स्थान निर्धारित है व वहां एक तसले में रेत भरी रहती है जिसके आसपास ही आप सिगरेट पी सकते है। एअरपोर्ट पर भी अलग से स्मोक जोन है।

हमारे यहां भी सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान वर्जित है परंतु कड़ाई से इस नियम का पालन न होने से धूम्रपान निषेध कानून का कोई महत्व नहीं है। यह कैसी विडम्बना है कि एक व्यक्ति की हत्या करने पर हत्यारे को फांसी पर चढा दिया जाता है लेकिन अनेक लोगों को कैंसर जैसे प्राणघातक रोग की तरफ धकेलने वाले बीड़ी सिगरेट निर्माताओं पर मात्र कुछ राजस्व के लालच में सरकार का उन्हें वरदहस्त प्राप्त हो जाता है।

अतः धूम्रपान के विरूद्ध प्रभावी जनचेतना उत्पन्न करनी होगी अन्यथा धूम्रपान निषेध की कोई सार्थकता नहीं रह जायेगी।

''हार्दिक आभार''

प्रिय समाज बन्धुओं/बहिनों,

सादर वन्दे।

आप सभी के सहयोग से खंडेलवाल वैश्य महासभा का 30वां राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 4-5-6 जून, 2005 को झीलों की नगरी उदयपुर में सफलता पूर्वक शान्तिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हो गया। मैं समस्त समाज का इसके लिये हृदय से आभारी हूँ। जिस उद्देश्य व लक्ष्य को लेकर मैं चला उसे प्रभु कृपा व आप सभी के सहयोग से पूरा कर सका।

उदयपुर समाज के युवकों ने अधिवेशन की जो सुव्यवस्थायें की उसकी प्रशंसा तो वहां गये प्रत्येक समाज बन्धु के मुख पर थी। वहाँ के समाज ने इतने कम समय में महासभा अधिवेशन आयोजित कर प्रशंसनीय कार्य किया। मैं अपनी ओर से व समस्त समाज की ओर से उन्हें शुभकामनायें देता हूँ कि वहां की संस्था व समाज निरन्तर प्रगति करता रहें।

संरक्षक श्री जयनारायणजी मेठी व अध्यक्षजी ने मुझे पुनः संयुक्तमंत्री (केन्द्रीय कार्यालय) का जो दायित्व सौंपा है। इसके लिये मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ तथा सभी समाज बन्धुओं से यह अपेक्षा करता हूँ कि पूर्व की भाँति मेरा सहयोग करते रहेंगे।

इस सत्र में संरक्षक जी, अध्यक्षजी व प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में संस्था के सभी कार्य संवैधानिक व लोकतांत्रिक तरीके से सम्पन्न किये जावेंगे। इसमें सभी कार्यकारिणी के सदस्यों से मार्गदर्शन व सहयोग की अपेक्षा रखता हूँ।

पुनः आपके सहयोग व सद्भावना के लिये धन्यवाद।

आपका
रामरतन घीया
संयुक्त मंत्री

बनिता मण्डल

पसीने से पायें निजात

पसीने की समस्या गर्मियों में एक आम बात है। आप कितनी ही आकर्षक क्यों न हो यदि पसीना अधिक आता है या बदबू आने लगे तो सारे किये कराये पर पानी फिर जाता है। गर्मियों में स्नान को विशेष ध्यान दें, दिन में दो बार शीतल जल से स्नान अवश्य करें। न नहाने से शरीर में पसीना आता रहता है। इससे घमौरियाँ तथा फोडे फुन्सी होने का अंदेशा रहता है। नहाने से पसीना धुल जाता है तथा रोम छिद्र भी खुल जाते है। यूं तो पसीना आना अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है परन्तु अधिक पसीना आने से आपका मेकअप धुल जाता है तथा बदबू आने से साथ बैठने वाले भी संकोच करने लगते है। पसीने से निजात पाने के लिये कुछ बाते बता रहीं हूं। पसीने का सम्बन्ध खाने पीने से भी है। यदि गर्मी में थोड़ा ध्यान अपने खान पान पर दें तो कुछ राहत जरूर मिलती है। आज के समय में खान पान व रहन सहन में बदलाव आना जरूरी है।

- एक बार के पहने कपड़े दुबारा धोकर ही पहनें, क्योंकि पसीने वाले कपड़ों में जीवाणु पनप जाते हैं।
- स्नान के बाद टेलकम पाउडर लगायें। ध्यान रहे थोड़ा तथा अच्छे पाउडर का इस्तेमाल करें।
- स्नान के पानी में थोड़ा सा नींबू का रस या यूडी कोलोन डालने से शरीर में ताजगी महसूस होती है।
- बहुत ज्यादा पसीना आता हो तो स्नान के पानी में सिरका भी डाल सकती है।
- प्याज लहसुन ज्यादा खाने से भी पसीने में बदबू आने लगती है।
- सूती कपड़ों का ही प्रयोग करें। सिंथेटिक कपड़े में हवा पास नहीं होने से पसीना भी अधिक आता है। जहां तक हो सूती कपड़े ही पहनें तंग कपड़े न पहनें। इसी प्रकार पाई जा सकती है पसीने से निजात

खान पाने के टिप्स–

- तले हुए तथा मीठे खाने से परहेज ही रखें जहाँ तक हो कम खायें।
- रोजाना हल्का व्यायाम करें इससे आपका ब्लड सर्कूलेशन ठीक रहेगा।
- दो बार स्नान अवश्य करें व अपनी त्वचा को साफ रखें।
- खाने में हल्के मसाले ही खायें।
- रसदार फल खायें, खूब पानी पीयें तथा पत्तेदार सब्जी का ज्यादा प्रयोग करें।
- ज्यादा भारी खाना न खायें। इससे शरीर के तापमान में बढोतरी होती है।
- आलस और नींद से बचने के लिये प्रोटीन से भरपूर खाना खायें।
- अपनी जरूरत के अनुसार ही खाना खायें भूख से जरा सा कम खायें।

श्रीमती सावित्री देवी खंडेलवाल ,दिल्ली

जिन्दगी और मौत

हर एक का मौत से सामना होता है
फिर मौत से घबराना क्या
क्योंकि मौत की उम्र एक क्षण की होती है।
जबकी जिन्दगी लम्बी होती है।
हर मौत के बाद एक जिन्दगी शुरू होती हे।
जिन्दगी के बाद फिर मौत आती है।
मौत बार बार आती हे।
मगर जिन्दगी का सिलसिला खत्म नहीं होता।
जिदगी और मौत का तो साथ है।
मौत तो नई जिन्दगी की शुरुआत है।
फिर मौत से डरना क्या?
मर मर कर जीना क्या?
आये तो आने दो
खुशी खुशी गले लगाओ उसको।

डॉ. नवल किशोर सेठी
बडियाल कलॉ,, दौसा

13,500 करोड़ रू. से अधिक खर्च करने पड़ते है। मैसा चुसेटस दुनियाँ का ऐसा शहर है जहाँ सत्रहवीं शताब्दी में कानून बनाया गया था कि शहर से पांच मील बाहर तक कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नहीं कर सकता।

कनाडा, ब्राजील ऐसे देश है जहां सिगरेट के पैकिट पर धूम्रपान विरोधी चित्र होंगे। ये चित्र सिगरेट पीने वालों को हर कश के साथ उनके स्वास्थ्य को हो रही हानि की याद दिला सके। ब्राजील में धूम्रपान छोडने के इच्छुक व्यक्तियों के मार्गदर्शन हेतु टेलीफोन नंबर भी दिए होते है जहां से उन्हें धूम्रपान छोड़ने के बारे में जानकारी मिल जाती है।

अमेरिका के कैलीफोर्निया शहर में बीडी पीने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। मलेशिया में मुस्लिम नेताओं ने धूम्रपान के विरूद्ध फतवा जारी किया है।

हांगकांग में धूम्रपान केवल स्मोक जोन क्षेत्र में किया जा सकता है। सडकों पर कई जगह फुटपाथ पर स्थान निर्धारित है व वहां एक तसले में रेत भरी रहती है जिसके आसपास ही आप सिगरेट पी सकते है। एअरपोर्ट पर भी अलग से स्मोक जोन है।

हमारे यहां भी सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान वर्जित है परंतु कड़ाई से इस नियम का पालन न होने से धूम्रपान निषेध कानून का कोई महत्व नहीं है। यह कैसी विडम्बना है कि एक व्यक्ति की हत्या करने पर हत्यारे को फांसी पर चढा दिया जाता है लेकिन अनेक लोगों को कैंसर जैसे प्राणघातक रोग की तरफ धकेलने वाले बीड़ी सिगरेट निर्माताओं पर मात्र कुछ राजस्व के लालच में सरकार का उन्हें वरदहस्त प्राप्त हो जाता है।

अतः धुम्रपान के विरूद्ध प्रभावी जनचेतना उत्पन्न करनी होगी अन्यथा धूम्रपान निषेध की कोई सार्थकता नहीं रह जायेगी।

"हार्दिक आभार"

प्रिय समाज बन्धुओं/बहिनों,

सादर वन्दे।

आप सभी के सहयोग से खंडेलवाल वैश्य महासभा का 30वां राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 4-5-6 जून, 2005 को झीलों की नगरी उदयपुर में सफलता पूर्वक शान्तिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हो गया। मैं समस्त समाज का इसके लिये हृदय से आभारी हूँ। जिस उद्देश्य व लक्ष्य को लेकर मैं चला उसे प्रभु कृपा व आप सभी के सहयोग से पूरा कर सका।

उदयपुर समाज के युवकों ने अधिवेशन की जो सुव्यवस्थायें की उसकी प्रशंसा तो वहां गये प्रत्येक समाज बन्धु के मुख पर थी। वहाँ के समाज ने इतने कम समय में महासभा अधिवेशन आयोजित कर प्रशंसनीय कार्य किया। मैं अपनी और से व समस्त समाज की ओर से उन्हें शुभकामनायें देता हूँ कि वहां की संस्था व समाज निरन्तर प्रगति करता रहें।

संरक्षक श्री जयनारायणजी मेठी व अध्यक्षजी ने मुझे पुनः संयुक्तमंत्री (केन्द्रीय कार्यालय) का जो दायित्व सौंपा है। इसके लिये मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ तथा सभी समाज बन्धुओं से यह अपेक्षा करता हूँ कि पूर्व की भाँति मेरा सहयोग करते रहेंगे।

इस सत्र में संरक्षक जी, अध्यक्षजी व प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में संस्था के सभी कार्य संवैधानिक व लोकतांत्रिक तरीके से सम्पन्न किये जावेंगे। इसमें सभी कार्यकारिणी के सदस्यों से मार्गदर्शन व सहयोग की अपेक्षा रखता हूँ।

पुनः आपके सहयोग व सद्भावना के लिये धन्यवाद।

आपका
रामरतन घीया
संयुक्त मंत्री

बनिता मण्डल

पसीने से पायें निजात

पसीने की समस्या गर्मियों में एक आम बात है। आप कितनी ही आकर्षक क्यों न हो यदि पसीना अधिक आता है या बदबू आने लगे तो सारे किये कराये पर पानी फिर जाता है। गर्मियों में स्नान को विशेष ध्यान दें, दिन में दो बार शीतल जल से स्नान अवश्य करें। न नहाने से शरीर में पसीना आता रहता है। इससे घमौरियाँ तथा फोडे फुन्सी होने का अंदेशा रहता है। नहाने से पसीना धुल जाता है तथा रोम छिद्र भी खुल जाते है। यूं तो पसीना आना अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है परन्तु अधिक पसीना आने से आपका मेकअप धुल जाता है तथा बदबू आने से साथ बैठने वाले भी संकोच करने लगते है। पसीने से निजात पाने के लिये कुछ बाते बता रहीं हूं। पसीने का सम्बन्ध खाने पीने से भी है। यदि गर्मी में थोड़ा ध्यान अपने खान पान पर दें तो कुछ राहत जरूर मिलती है। आज के समय में खान पान व रहन सहन में बदलाव आना जरूरी है।

- एक बार के पहने कपड़े दुबारा धोकर ही पहनें, क्योंकि पसीने वाले कपड़ों में जीवाणु पनप जाते हैं।
- स्नान के बाद टेलकम पाउडर लगायें। ध्यान रहे थोड़ा तथा अच्छे पाउडर का इस्तेमाल करें।
- स्नान के पानी में थोड़ा सा नींबू का रस या यूडी कोलोन डालने से शरीर में ताजगी महसूस होती है।
- बहुत ज्यादा पसीना आता हो तो स्नान के पानी में सिरका भी डाल सकती है।
- प्याज लहसुन ज्यादा खाने से भी पसीने में बदबू आने लगती है।
- सूती कपड़ों का ही प्रयोग करें। सिंथेटिक कपड़े में हवा पास नहीं होने से पसीना भी अधिक आता है। जहां तक हो सूती कपड़े ही पहनें तंग कपड़े न पहनें। इसी प्रकार पाई जा सकती है पसीने से निजात

खान पाने के टिप्स–

- तले हुए तथा मीठे खाने से परहेज ही रखें जहाँ तक हो कम खायें।
- रोजाना हल्का व्यायाम करें इससे आपका ब्लड सर्कूलेशन ठीक रहेगा।
- दो बार स्नान अवश्य करें व अपनी त्वचा को साफ रखें।
- खाने में हल्के मसाले ही खायें।
- रसदार फल खायें, खूब पानी पीयें तथा पत्तेदार सब्जी का ज्यादा प्रयोग करें।
- ज्यादा भारी खाना न खायें। इससे शरीर के तापमान में बढोतरी होती है।
- आलस और नींद से बचने के लिये प्रोटीन से भरपूर खाना खायें।
- अपनी जरूरत के अनुसार ही खाना खायें भूख से जरा सा कम खायें।

श्रीमती सावित्री देवी खंडेलवाल ,दिल्ली

जिन्दगी और मौत

हर एक का मौत से सामना होता है
फिर मौत से घबराना क्या
क्योंकि मौत की उम्र एक क्षण की होती है।
जबकी जिन्दगी लम्बी होती है।
हर मौत के बाद एक जिन्दगी शुरू होती हे।
जिन्दगी के बाद फिर मौत आती है।
मौत बार बार आती हे।
मगर जिन्दगी का सिलसिला खत्म नहीं होता।
जिदगी और मौत का तो साथ है।
मौत तो नई जिन्दगी की शुरूआत है।
फिर मौत से डरना क्या?
मर मर कर जीना क्या?
आये तो आने दो
खुशी खुशी गले लगाओ उसको।

डॉ. नवल किशोर सेठी
बडियाल कलॉं,, दौसा

संस्थाओं के समाचार

खंडेलवाल मित्र मण्डल इन्दौर

खंडेलवाल मित्र मण्डल,इन्दौर के वर्ष 2005-06 की कार्यकारिणी हेतु चुनाव अधिकारी श्री दिनेश कूलवाल द्वारा निम्न बन्धुओं को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया :-

अध्यक्ष- श्री सुभाष खंडेलवाल, उपाध्यक्ष- श्री विजेश खंडेलवाल, सचिव- श्री राजेश माचीवाल, सह सचिव- श्री सुरेश खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष- श्री ओमप्रकाश मेठी, प्रचार मंत्री- श्री शंकर गुप्ता, कार्यकारिणी सदस्य- सर्व श्री जगदीश पीतलिया, मोहन लाल टोडवाल, हरिश खंडेलवाल (सी.ए.), नारायण कूलवाल, दिनेश झालाणी, ओमप्रकाश बनावड़ी, राजू मेठी, गिरिराज खंडेलवाल, अनिल कूलवाल, अनिल डांस।

खंडेलवाल वैश्य सेवा समिति, दुर्गापुरा
निःशुल्क हॉबी क्लासेज

संस्था द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन निःशुल्क हॉबी क्लासेज का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

हॉबी क्लासेज के समापन समारोह के अवसर पर बालिकाओं द्वारा बनाये गये पेपर मैसी, क्रिस्टल बास्केट, डोरी -झूला, साडी फॉल, पेंटिंग इत्यादि वस्तुओं की आकर्षक प्रदर्शनी लगाई गई। ब्यूटीशियन कोर्स में भी बालिकाओं एवम् महिलाओं ने विशेष रूची ली। फिल्मी गानों पर बच्चों ने थिरक कर लोगों का मन मोहा, बालिकाएं अपनी पेन्टिंग, मेहन्दी को दिखाकर उत्साहित हो रही थी।

सचिव श्री मदनगोपाल कूलवाल ने अतिथियों का स्वागत किया व समाज की गतिविधियों की जानकारी दी। शिविर समन्वयक श्री रामप्रकाश खंडेलवाल ने शिविर के प्रतिवेदन में बताया कि सभी शिक्षिकाएं खंडेलवाल समाज की बालिकाएं थी। शिविर में 250 बालिकाओं ने प्रवेश लिया। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं निर्यातक श्री सतीश कट्टा ने प्रशिक्षण अवधि में शिविर का निरीक्षण किया और उद्बोधन में बच्चों के हुनर को सराहा। भारतीय कला और कलाकारों की विदेशों में बहुत माँग है उन्होंने योग्य कलाकारों को विदेश भिजवाने में सहयोग करने का आश्वासन दिया। पार्षद एवम अध्यक्ष (हैल्थ) नगर निगम, जयपुर श्री सोहन लाल ताम्बी ने बालिकाओं को हैण्डीक्राफ्टस बाजार की विभिन्न विशेषताओं तथा इनकी अन्तर्राष्ट्रीय मांग के बारे में जानकारी दी। बालिकाओं को हैण्डीक्राफ्ट में दक्षता प्राप्त कर सरकार द्वारा लगायी जा रही प्रदर्शिनियों में अपनी कला को प्रस्तुत करने की सलाह दी।

समापन समारोह पर विशेष आमंत्रित अतिथि विधायक प्रो. श्री वीरू सिंह राठौड़ ने बच्चों को पुरस्कार वितरित किये तथा बालिकाओं को आगे

बढ़कर राष्ट्र की उन्नति में भागीदार होने के लिए तैयार रहने के लिए कहा। पार्षद श्रीमती ज्योति खंडेलवाल, पार्षद श्री छीतर मल वर्मा, पार्षद श्री रमेश सैनी,

महासभा के कोषाध्यक्ष श्री रामकिशोर ताम्बी, श्री मोहन लाल खंडेलवाल पत्रकार आदि सभी समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्री सुरेश पाटोदिया ने समाज के इस प्रकार के आयोजन की सराहनीय प्रशंसा की तथा समाज की गतिविधियों के लिए स्वयं के भवन की आवश्यकता के लिए भूमि प्रबंध में अपना सहयोग देने का आवश्वासन दिया। श्री कन्हैया लाल बडगौती ने भवन निर्माण में धन सहयोग की घोषणा की। अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द कट्टा ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा समारोह में उपस्थित सभी बालक/बालिकाओं को भविष्य में अपनी-अपनी हॉबी में निरन्तर अभ्यास करते रहने की सलाह दी।

खंडेलवाल ग्रुप, मथुरा

खंडेलवाल ग्रुप की बैठक दिनांक 16 जून, 2005 गुरूवार को होटल मुकन्द पैलेस पर आयोजित की गई जिसमें चयन समिति के संयोजक श्री नरेन्द्र प्रकाश जी द्वारा नवीन सत्र के लिये पदाधिकारियों की घोषणा की गई। जिसमें पुनः अध्यक्ष मुकेश कुमार एडवोकेट, महामंत्री दिनेश चन्द्र खंडेलवाल, अलंकार वस्त्र भंडार, कोषाध्यक्ष राधेलाल खंडेलवाल हिन्दुस्तान सेनेटरी को बनाया गया। उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा नवीन पदाधिकारियों का तालियाँ बनाकर स्वागत किया गया।

बैठक में श्री मुरारी लाल, श्री राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री अमृत खंडेलवाल, श्री बनवारी लाल, श्री सुशील कुमार, श्री राकेश कुमार, श्री गिरीश चन्द, श्री अनिल कुमार, श्री राकेश चौधरी, श्री द्वारका प्रसाद, श्री सुधीर कुमार, श्री सुरेन्द्र कुमार (टोनी), श्री लक्ष्मण प्रसाद, श्री राजीव कुमार, श्री लक्ष्मन प्रसाद ओढ, श्री अनुज कुमार, श्री महेश चन्द्र, श्री हरिमोहन, श्री शिव कुमार गुप्ता आदि उपस्थित थे।

इस बैठक के आतिथ्यकर्ता श्री सुरेशचन्द्र वकील साहब को आतिथ्य के लिये धन्यवाद दिया गया।

खंडेलवाल वैश्य समाज सेवा समिति, विद्याधर नगर, जयपुर

संस्था के वर्ष 2005-07 की कार्यकारिणी के चुनाव महासभा के चुनाव संयोजक श्री रामस्वरूप ताम्बी एवं महासभा पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक श्री सत्यनारायण बाजरगान द्वारा दि. 17-7-2005 को सम्पन्न कराये गये। चुनावों में अध्यक्ष श्री रामावतार खंडेलवाल, व. अध्यक्ष- श्री हनुमान सहाय माणक बोहरा, उपाध्यक्ष- श्री मोहनलाल नाटाणी, मंत्री-श्री भंवर लाल गुप्ता, कोषाध्यक्ष- श्री वीरेन्द्र कुमार बटवाड़ा, संयुक्तमंत्री- श्री राजेन्द्र कासलीवाल, सांस्कृतिक मंत्री- श्री प्रकाश बड़ाया, संगठन मंत्री- श्रीतारा शंकर कायथवाल, का.का. सदस्य सर्व श्री अशोक कुमार झालाणी, कैलाश कुमार गुप्ता, कैलाश चन्द्र कूलवाल, छीतर मल दुसाद, जगत बन्धु खंडेलवाल, गणेश शंकर शाह, मोहन लाल गुप्ता, रविन्द्र कुमार गुप्ता, राजेश डंगायच, रामावतार खंडेलवाल, रामगोपाल सौंखिया, ललित मोहन गुप्ता, लाल चन्द दुसाद श्याम सुन्दर शाह, सत्यनारायण धामानी, सुरेश चन्द्र गुप्ता एवं श्रवण कुमार गुप्ता को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

खंडेलवाल नवयुवक मण्डल, नदबई

खंडेलवाल नवयुवक मण्डल नदबई के चुनाव वर्ष 2005-06 के लिए श्री चन्द्रप्रकाश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष-शान्तिस्वरूप गुप्ता, उपाध्यक्ष-चन्द्रप्रकाश गुप्ता, महासचिव- उमेश पाटोदिया, सचिव- गोविन्द प्रसाद बम्ब, कोषाध्यक्ष- जोगेन्द्र कुमार।

कार्यकारिणी सदस्य हेतु-सर्व श्री अभिषेक बम्ब, दीपक मेठी, मनोज कुमार धौंकरिया, दीपक खंडेलवाल, लोकेश मेठी एवं राजेश कुमार को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

खंडेलवाल युवा संघ, रामगढ़ पचवारा

खंडेलवाल युवा संघ, रामगढ़ पचवारा तह. लालसोट दौसा के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष- श्री हनुमान प्रसाद केदावत, उपाध्यक्ष- श्री रामचरण काठ, कोषाध्यक्ष- श्री जगदीश प्रसाद बडाया, सचिव- सर्वश्री भगवान सहाय निराणवाल, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री रामप्रसाद बढेरा, नवलकिशोर निराणवाल, देवेन्द्र कुमार पीतलिया, राधामोहन दुसाद, कमलेश निराणवाल, कमलेश केदावत एवं निरंजन माठा को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

दौसा जिला खंडेलवाल वैश्य सेवा समिति, दौसा

महिला अभिरूचि प्रशिक्षण समापन पर प्रदर्शनी

दौसा जिला खंडेलवाल वैश्य सेवा समिति के तत्वावधान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महिलाओं का ग्रीष्मकालीन निःशुल्क अभिरूचि तीन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन 18 मई से 10 जून तक किया गया। बालिकाओं को स्वरोजगार एवं ड्राइंग रूम आदि सजाने की विधाओं में 87 बालिकाओं को कढ़ाई, बुनाई, सिलाई, फ्लावर मेकिंग, सॉफ्ट टायज, एप्पल ट्री, फ्रट ट्री, ग्लास एवं पाट पेन्टिंग, बिन चैन, मैगजीन होल्डर में सघन प्रशिक्षण दिया गया।

10 जून को आयोजित समापन समारोह में संस्था के अध्यक्ष गणपत लाल गुप्ता महामंत्री गोपाल अनुज के अलावा श्री रामगोल माणक बोहरा, सत्यनारायण रेला, मुरलीधर खंडेलवाल, घनश्याम रावत, हरिनारायण गुप्ता, सुरेश बाजरगान आदि समाज के अनेक प्रमुख लोग उपस्थित थे। महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मीरेला, उपाध्यक्ष श्रीमती सुनीता बेवाल, रामगोपाल माणक बोहरा एवं गणपत लाल गुप्ता द्वारा सभी को प्रमाण पत्र प्रदान किये। नयनाभिराम प्रदर्शनी में एक से बढ़कर एक आइटम तैयार किये गये थे, जिन्हें अवलोकन कर काफी सराहा गया। कु. कल्पना, आयुषी खंडेलवाल एवं सौरभ रेला द्वारा सभी को प्रशिक्षण दिया गया।

श्री आमण माता सेवा समिति, जयपुर

श्री आमण माता सेवा समिति, जयपुर के अध्यक्ष, श्री रामेश्वर प्रसाद आमेरिया द्वारा पदाधिकारियों एवं सदस्यों का मनोनयन कर कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार किया गया :-

उपाध्यक्ष-श्री सीताराम माणकबोहरा, श्री रामबाबू भुखमारिया, मंत्री- श्री आर.जी. भुखमारिया, संयुक्त मंत्री- श्रीसंजय आमेरिया, श्रीजगदीश नारायण भुखमारिया, कोषाध्यक्ष- श्री गणपत लाल माणक बोहरा, संगठन मंत्री- श्री दामोदर प्रसाद भुखमारिया, प्रचार मंत्री- श्री हरिनारायण भुखमारिया, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री राधारमण आमेरिया, ताराचन्द भुखमारिया, महेश भुखमारिया, कैलाश नारायण भुखमारिया, हंसराज भुखमारिया एवं बिहारी लाल भुखमारिया।

खंडेलवाल वैश्य सभा-बरेली

खंडेलवाल वैश्य सभा, बरेली द्वारा द्वितीय खंडेलवाल वैवाहिक परिचय सम्मेलन-2005 का आयोजन आगामी 5 व 6 नवम्बर, 2005 को एक्जीक्यूटिव क्लब, बरेली में करने का निर्णय लिया गया है। उक्त सम्मेलन को आयोजित करने के लिए समिति का गठन कर लिया गया है।

खंडेलवाल वैश्य समाज उत्तरांचल

खण्डेलवाल वैश्य समाज, उत्तराचंल द्वारा दि. 25 मई, 2005 को लिये गये सर्व सम्मत निर्णयानुसार वर्ष 2006 बसन्त पंचमी का अखिल भारतीय खंडेलवाल वैश्य मिलन समारोह हरिद्वार में दिनांक 17,18, 19 फरवरी, 2006 दिन शुक्रवार, शनिवार व रविवार को त्रि-दिवसीय आयोजन किया जायेगा।

जो खंडेलवाल बन्धु उपरोक्त समय से 2-3 दिन पूर्व या 2-3 दिन बाद तक हरिद्वार में रहना चाहें तो रहने का उनकी पूर्व सूचना पर प्रबन्ध कर दिया जायेगा।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

अध्यक्ष श्री मुरारी लाल जी 09837634692, 0135-2654313, मंत्री- श्री श्रीकान्त जी 09412084493, 05946-254493, 254495 संयोजक- श्री आनन्द स्वरूप जी 09412992976, 0135-2651676, 2722302

भव्य फूल बंगला एवं जल विहार का आयोजन

ठा. राधा वल्लभ जी महाराज खंडेलवाल वैश्य पंचायती मंदिर (मथुरा) के प्रांगण में भव्य फूल बंगला एवं जलविहार का आयोजन दिनांक 22 जून, 05 बुधवार को किया गया। सेवायत थे पंडित गोविन्द प्रसाद गोस्वामी। इस अवसर पर नौका में विराजमान ठाकुरजी के भव्य दर्शनों का आनन्द भक्तजनों ने लिया। प्रसाद के रूप में शीतल शर्बत का वितरण किया गया। कार्यक्रम का समापन रात्रि आरती के साथ हुआ।

इस अवसरपर मंदिर के प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्याम सुन्दर खंडेलवाल, उपाध्यक्ष लक्ष्मन प्रसाद, मंत्री दिनेश चन्द कोषाध्यक्ष हजारी लाल, पूर्व अध्यक्ष चन्द्रभान रंगवाले पूर्व मंत्री राजेन्द्र प्रसाद चौधरी द्वारका प्रसाद बढाइया, जगदीश प्रसाद चौधरी, राजेश कुमार आनन्द प्रकाश, कृष्ण मुरारी खंडेलवाल, छीतर मल टोडवाल, अजय कुमार, गणेशी लाल, हरी बाबू गुप्ता आदि उपस्थित थे।

खंडेलवाल (वैश्य) समाज महासंघ नव परगना, सिरोही

संरजू कुमार अध्यक्ष श्री खंडेलवाल (वैश्य) समाज महासंघ नव परगना सिरोही ने महासंघ कार्यकारिणी का गठन किया जो इस प्रकार है:-

उपाध्यक्ष- श्री बाबू लाल जी सवाजी खूंटेटा, सिया श्रीकिशन लाल जी बगताजी कूलवाल, सुमेरपुर, महामंत्री श्री मांगीलाल जी प्रेमराज जी रावत, जालोर, सहमंत्री- श्री देवकिशन चुन्नी लाल जी खूंटेटा, बालोतरा, कोषाध्यक्ष श्रीराम लाल जी मूलचंद जी नाटाणी बडगाँव, कार्या.मंत्री श्री लोकेश कुमार जी डाया लाल जी नाटाणी सिरोही, सदस्य- श्री अमीचंद जी मनरूप जी कायथवाल, आबूरोड, श्रीशान्ति लाल जी खूबचंद जी खूंटेटा, सिया, माणकचंद जी धनराज जी कायथवाल, पोसावालिया, श्री हिम्मत मल जी धर्मचन्द जी खूंटेटा सिरोही, श्री छगन लाल जी बाबू लाल जी कूलवाल, भटाणा, श्रीपुरूषोत्तम जी हुक्मीचंदजी खूंटेटा, अजारी, श्री मदन लाल, श्री हरी लालजी खूंटेटा, श्री दियोदर, श्री सुरेश कुमार जी श्री शंकर लाल जी कायथवाल, बाडमेर, श्री किशोर कुमार जी रिखबखंद जी खूंटेटा, जावाल, श्री घनश्याम जी गणपतलाल जी धौंकरिया, जोधपुर, श्री दिलीप कुमार कांतिलाल जी कायथवाल, (धानेरा), श्री अरविंद कुमार जी रूपचंद कूलवाल, रानीवाड़ा, सुश्री डा. मीना पुत्री श्री रमेश कुमार जी खूंटेटा कोल्हापुर धानेरा, सुश्री डा. वर्षा पुत्री श्री वेलचंद जी खूंटेटा, भायन्दर, सिया।

वैश्य समाज की गोठ व कार्यकर्ता सम्मेलन 14 अगस्त को

वैश्य महासम्मेलन के जयपुर स्थित प्रमुख पदाधिकारियों की बैठक किशनपोल बाजार स्थित प्रदेश कार्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष श्री मोहनदास अग्रवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुयी। बैठक में मुख्य रूप से यह निर्णय लिया गया कि जयपुर जिला वैश्य महासम्मेलन के कार्यकर्ताओं की एक गोठ व वैश्य समाज के विभिन्न घटकों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन 14 अगस्त, 05 को सुखम् गार्डन में आयोजित किया जावे।

उक्त कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया। जिसमें सर्वश्री रामावतार सिंघल, अरूण अग्रवाल, आनन्द महरवाल, कमलेश खंडेलवाल व सत्यनारायण बाजरगान का चयन किया गया। इन्हें स्थान निर्णय करने व अन्य निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया गया। उक्त अवसर पर अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदरदास मोदी व प्रदेश महामंत्री श्री रामेश्वर प्रसाद खंडेलवाल ने वैश्य समाज का सामूहिक वैवाहिक परिचय सम्मेलन करने का सुझाव दिया जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार. किया।

इस मिटिंग में यह भी निर्णय लिया गया .कि वैश्य समाज के एक घटक से दूसरे घटक में दिनांक 1-1-2004 से अब तक कि अवधि में जिस युवक व युवती ने विवाह किया है उस जोडे का उक्त तिथि को वैश्य सम्मेलन के सार्वजनिक मंच पर अभिनन्दन किया जाय। इसके अतिरिक्त वैश्य समाज के किसी भी छात्र/छात्रा ने गतवर्ष दसवीं, बारहवीं, बी.ए. या अन्य उच्च शिक्षा में 75 प्रतिशत अंक से अधिक अंक प्राप्त किए हों उनमें से प्रत्येक 3 छात्र/छात्रा को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

आवश्यक जानकारी श्री रामेश्वरम् 237-सौंखियों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर में दिनांक 7 अगस्त, 2005 तक भिजवाने का श्रम करें।

संवेदनाएं

✲ श्री तांराचन्द खंडेलवाल हौशंगाबाद का दिनांक 10 जून, 2005 को आकस्मिक निधन हो गया। आप धार्मिक व समाज सेवी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। संस्था आपके निधन पर गहरी संवेदनायें प्रकट करती है एवं प्रभु से प्रार्थना करती है वह दिवंगत आत्मा को अमरशान्ति प्रदान करे एवं शोक संतप्त परिवार को इस असीम दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री राधाकृष्ण दास भूखमारिया, दिल्ली

✲ महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री राधाकृष्णदास भुखमारिया दिल्ली का दिनांक 4 जुलाई, 2005 को निधन हो गया। फर्म भानामल एंड संस दिल्ली के मालिक थे। आप "राधे बाबू" के नाम से प्रसिद्ध थे। आपके निधन से समाज व व्यापारिक जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। महासभा के कोटा अधिवेशन 1963 में महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुये थे। महासभा आपके निधन पर गहरी संवेदनायें प्रकट करती है। आपके निधन के समाचार सुनते ही महासभा कार्यालय में शोक सभा आयोजित कर संवेदना प्रकट की व शोक प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

महासभा परिवारों के प्रति गहरी संवेदनायें प्रकट करते हुये सभी दिवंगत पुण्यात्माओं की अमरशांति की व सभी शोक संतप्त परिवारों को इस विछोह को सहन करने की शक्ति देने की प्रभु से प्रार्थना करती है।

देश विदेश के समाचार

1. लन्दन में बम विस्फोट ।
2. सुरक्षा परिषद में 5 स्थायी सदस्यों के स्थान पर 11 सदस्य का प्रस्ताव प्रस्तुत। भारत ने स्थायी सदस्यता का दावा पेश किया।
3. प्रधानमंत्री अमेरिका यात्रा पर पहुँचे। राजकीय अतिथि का दर्जा पाने वाले पाँचवे राष्ट्राध्यक्ष।
4. असम अवैध प्रवासी अधिनियम असंवैधानिक।
5. अयोध्या राममन्दिर परिसर में आतंकवादी हमला- सभी आतंकवादी सुरक्षा बलों द्वारा मारे गये। पाँच आतंकवादी गिरप्तार।

समाचार सूचनायें

रचित खंडेलवाल, ग्वालियर

श्री प्रहलाद दास खंडेलवाल (किलकिल्या) ग्वालियर के सुपौत्र (सुपुत्र श्री नरेश खंडेलवाल) श्री रचित खंडेलवाल ने बी.ई. इलेक्ट्रोनिक्स की परीक्षा सन् 2004 में एम.आई.टी.एस ग्वालियर से 76% अंकों के उत्तीर्ण की है। वर्तमान में आप विप्रो टेक्नोलॉजी लि. पुणे में प्रोजेक्ट इंजिनियर के पद पर कार्यरत है।

श्री प्रहलाद चन्द मेठी, गंगापुर सिटी

राजस्थान प्रदेश वैश्य महा सम्मेलन ने श्री प्रहलाद चन्द मेठी गंगापुर सिटी का प्रदेश का संगठन मंत्री के रूप में मनोनयन क्रिया है। श्री मेठी महासभा की का.का. के सदस्य है।

आभार-उदयपुर

श्री ओमप्रकाश गुप्ता, उपाध्यक्ष महासभा ने महासभा के उपाध्यक्ष निर्वाचित होने पर महासभा के पदाधिकारियों चुनाव समिति तथा उदयपुर समाज का आभार व्यक्त किया है। आपने अपने इस उत्तरदायित्व को निष्ठापूर्वक निभाने का वचन दिया है।

पूनम खंडेलवाल मेरिट छात्रा का सत्कार

समाज सेवी श्री नारायण दास खंडेलवाल की पौत्री एवं श्री किशोर खंडेलवाल की पुत्री कु. पूनम

खंडेलवाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नागपुर महाराष्ट्र कि 12वीं परीक्षा में विदर्भ में 84% प्रतिशत अंक प्राप्त कर मेरिट में उत्तीर्ण हुई है। हिसलॉप कॉलेज में प्रथम स्थान एवम विदर्भ में 11वां स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगितायें सम्पन्न

दी मॉडर्न हैप्पी स्कूल, किशनपोल बाजार, जयपुर में एकल नृत्य एवं विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिताएं विद्यालय प्रांगण में 14 मई, 2005 को आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं में लगभग 70 प्रतियोगियों ने भाग लिया। कार्यकम की मुख्य अतिथि स्थानीय पार्षद श्रीमती ज्योति खंडेलवाल थीं प्रारम्भ में विद्यालय प्रधानाध्यापिका श्रीमती मिथलेश शर्मा द्वारा मुख्य अतिथि का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

संस्था निदेशक श्री श्रीराम डंगायच द्वारा प्रतियोगिताओं की जानकारी दी गयी। निर्णायक के पद पर संगीत एवं नृत्य विशेषज्ञ श्री हरिदत्त कल्ला, श्रीमती कोकिला जैन एवं श्री रामस्वरूप ताम्बी थे। सभी विजेता एवं उपविजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये एवं सभी भाग लेने वाले प्रतियोगियों को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

अन्त में सभी पधारे हुए अतिथि महानुभावो एंव अभिभावकों का श्री कल्याण मल खंडेलवाल द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

निःशुल्क ब्लड ग्रुप जांच शिविर

महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष व का.का. के सदस्य श्री चिरंजीलाल भुखमारिया बम्बई वालो ने खंडेलवाल वैश्य समाज, तोपखाना देश जयपुर के तत्वावधान में निःशुल्क ब्लड ग्रुप जांच शिविर का आयोजन दिनांक 29 मई, 2005 को कराया।

इसमें संस्था के पदाधिकारियों के अलावा राजस्थान के पूर्व राज्यमंत्री श्री श्रीरामगोटेवाला, हितकारिणी सभा के अध्यक्ष श्री सोहनलाल ताम्बी, विधायक श्री मोहनलाल गुप्ता ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। श्री खंडेलवाल ने मेडीकोज सोसाईटी, जयपुर के सहयोग से यह आयोजन सम्पन्न किया।

श्री पंकज बटवारा, कानपुर को आर्थिक सहायता

कानपुर के चि. पंकज बटवारा पुत्र श्री हरिशंकर बटवारा, गुजैनी, कानपुर नगर निवासी के एम.बी.ए. पूना में प्रवेश के लिए धनराशि रू. 10000/- अंकेन दस हजार चि. पंकज को उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये स्वेच्छा से श्री अशोक कुमार कूलवाल, मुकेश कूलवाल, मनमोहन खूंटेटा, सीताराम मेठी, राजेश रावत, हृदेश कठोरिया, अमरनाथ कूलवाल, निशांत पागूवल, एवं कैलाश बडईया ने आर्थिक सहयोग दिया।

श्री खंडेलवाल वैश्य सेवा संघ कानपुर ने सभी आर्थिक सहयोग करने वालों को धन्यवाद दिया।

रांजेश लोहिया भाजपा मण्डल अध्यक्ष निर्वाचित

आप खंडेलवाल समाज खेरली के मंत्री व खंडेलवाल युवा समिति खेरली के अध्यक्ष रह चुके हैं। प्रारम्भ से ही समाज सेवा व राजनीति में सक्रिय रहे हैं। पेशे से एडवोकेट हैं तथा भारत सरकार से रजिस्टर्ड नोटेरी पब्लिक है।

श्री ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा

दिनांक 17 अक्टूबर से 26 अक्टूबर, 2005 तक

श्री बृजयात्रा आयोजन समिति, वृन्दावन द्वारा इस वर्ष भी शरद पूर्णिमा के अवसर पर दिनांक 17 अक्टूबर से 26 अक्टूबर, 2005 तक 10 दिवसीय बृज चौरासी कोस यात्रा का आयोजन किया जा रहा है, समिति द्वारा गत वर्ष के अनुभव के आधार पर इस वर्ष की यात्रा को और अधिक सुविधा-जनक बनाया जा रहा है, इस यात्रा में बृजमण्डल स्थित सभी तीर्थ, कुण्ड, सरोवर तथा भगवान श्री कृष्ण की लीला स्थलियों का दर्शन सुलभ होता है। यात्रा प्रतिदिन श्री वृन्दावन धाम से प्रातः 7 बजे प्रस्थान कर सायंकाल 7-8 बजे तक वापस वृन्दावन आ जाती है। यात्रा वाहनों द्वारा की जाती है। आवास, भोजन, वाहन, गाइड तथा अन्य सभी व्यवस्थाऐं समिति द्वारा की जाती है तथा सभी व्यवस्थायें उच्चस्तरीय रखी जाती है। श्रीं गिर्राजजी गोवर्धन तथा श्री बांके बिहारी जी वृन्दावन में छप्पन भोग का सुन्दर उत्सव मनाया जाता है। शरद पूर्णिमा के अवसर पर वृन्दावन के सभी मंदिरों में विशेष झांकी दर्शन होते हैं। बृज का यह एक प्रमुख उत्सव है, रात्रि के महारास दर्शन का सौभाग्य भी प्राप्त होगा। आवास की अच्छी व्यवस्था हेतु तीन माह पूर्व ही स्थान आरक्षित कराना पड़ता है तथा सभी व्यवस्थायें पूर्व में करने से सभी कुछ सुविधाजनक रहता है। आय अभी से अपना आरक्षण करा लेवें। सम्पर्क- सुरेश खंडेलवाल 202, कन्हैया कुटीर, राधा निवास, वृन्दावन- 281121, (मथुरा), फोन-9412279319, (0565) 2443099; महेश खंडेलवाल, रमण रेती, वृन्दावन-281121 फोन-9837022973

समाज की प्रतिभाएं

मास्टर राहुल

मास्टर राहुल पुत्र श्री गिरधर खंडेलवाल इन्दौर ने 8वीं बोर्ड की परीक्षा में 81% से पास करके स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। धन्यवाद

भूषण खंडेलवाल

12वीं बोर्ड में विदर्भ में प्रथम स्थान पर

नंदनवन नागपुर निवासी महेश खंडेलवाल के सुपुत्र भूषण खंडेलवाल ने 12वीं बोर्ड की परीक्षा में मेरीट लिस्ट सूची 96.83 प्रतिशत अंक लेकर महाराष्ट्र की मेरिट सूची में द्वितीय स्थान व सम्पूर्ण विदर्भ में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसके पूर्व 10वीं बोर्ड में भी भूषण ने मेरिट सूची में 31वां स्थान प्राप्त किया था। भूषण के पिता श्री महेश खंडेलवाल केन्द्र सरकार के महालेखाकार कार्यालय में तथा माता श्रीमती मधु सेंट्रल बैंक में कार्यरत है।

कु. तोषिका खंडेलवाल, जयपुर

कु. तोषिका खंडेलवाल सुपुत्री श्री ओमप्रकाश खंडेलवाल

जयपुर द्वारा आठवीं बोर्ड पैटर्न परीक्षा 2005 में 88.17 प्रतिशत अंक प्राप्त कर समाज का गौरव बढ़ाया है। महासभा परिवार इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

कु. लक्ष्मी खंडेलवाल,अमरावती

श्री प्रवीन खंडेलवाल की पुत्री कु. लक्ष्मी खंडेलवाल ने महाराष्ट्र बोर्ड की 12वीं कॉमर्स में मेरिट में पांचवा स्थान प्राप्त किया है। इन्होंने 74.33 प्रतिशत अंक प्राप्त किए है। भविष्य में कु. लक्ष्मी सी.ए. बनना चाहती है।

कु. अदिति गुप्ता, सवाई माधोपुरा

श्री अरविन्द कुमार खंडेलवाल की सुपुत्री कु. अदिति गुप्ता ने आठवीं बोर्ड परीक्षा में 95.17% अंक प्राप्त कर वरीयता सूची में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। उसने अपनी कक्षा में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आप खेलकूद व संगीत में रूचि रखती है। अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता को देती है।

गौरव खंडेलवाल, अलवर

गौरव ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की दसवीं की परीक्षा मैं 90% अंक प्राप्त कर यह परीक्षा पास की है। आप श्री दामोदर प्रसाद खंडेलवाल बैंक मैनेजर अलवर के पुत्र हैं।

कु. दर्शना खंडेलवाल विद्यालय में अव्वल रही

कु. दर्शना खंडेलवाल ने म.प्र. बोर्ड की 10वीं परीक्षा में 84% अंक प्राप्त कर विद्यालय में अपना स्थान प्रथम बनाया। आपको सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त हुई है।

इस वर्ष 10वी बोर्ड का रिजल्ट मात्र 35% रहा। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में इतने अच्छे अंक प्राप्त करना गौरव की बात है।

भविष्य में आपकी डॉक्टर बनने की इच्छा है।

मैरिज ब्यूरो

वधु चाहिये

25 वर्षीय कद 5 फीट 5'' शिक्षा बी.कॉम,गोत्र बडाया वैद स्वयं के व्यवसाय में संलग्न। सम्पर्क सूत्र- बालाजी इलेक्ट्रोनिक्स इलेक्ट्रीकल्स एंड मोबाईल सेन्टर 66 तानसेन रोड, तिरूपति मोटर्स के पास, हजोरा, ग्वालियर (म.प्र.)। मो. 9300120168

24 वर्षीय शिक्षा बी.कॉम कद 5 फीट 7'' स्वयं के व्यवसाय में संलग्न, गोत्र-कायथवाल, जंघिनिया, सम्पर्क सूत्र- श्री सियाराम कायथवाल द्वारा- खंडेलवाल केटरिंग, ठेकेदार राज्य स्वास्थ्य एवं संचार प्रबन्ध संस्थान ग्वालियर (म.प्र.) मो. नं. 5535929

27 वर्षीय कद 5 फीट 7'' शिक्षा एम.ए. एम.बी.ए. गोत्र सौंखिया खूंटेटा सम्पर्क सूत्र श्री हरीश गुप्ता मो. 9422781169

26 वर्षीय कद 5 फीट 3'' शिक्षा इंजिनियर एवं अमेरिका से मास्टर्स न्यूयार्क में अमेरिकन एक्सप्रेस में कार्यरत गोत्र- आकड, जसोरिया। सम्पर्क सूत्र- श्री ओ.पी. गुप्ता के.डी. 61 ए फेज प्रथम अशोक विहार नई दिल्ली-52 फोन-27118374 अथवा

श्री एस.सी.गुप्ता

125 दी मकेना, 15-01 मेय्रर रोड, सिंगापुर-437932 फोन नं. 0065-64405096

25 वर्षीय कद 5 फीट 8'' शिक्षा एम.ए., बी.एड. राजकीय अध्यापक, गोत्र जसोरिया खूंटेटा सम्पर्क सूत्र- श्रीकालूराम गुप्ता राजनौता तह. कोटपुतली जयपुर-राज. फोन नं. 01421-283403

28 वर्षीय कद 5 फीट 9'' शिक्षा एम.एस.सी., बी.एड. अध्यापक गोत्र केदावत, कूलवाल सम्पर्क सूत्र श्री बी.एल.केदावत सी-19 गोविन्दपुरी रामनगर एक्सटेंसन सोडाला, जयपुर मो. 98280-68685 फो.951428244710

वर चाहिये

24 वर्षीया, कद 5 फीट शिक्षा बी.ए. कॉमर्शियल आर्ट में डिप्लोमा गोत्र झालानी, खूंटेटा, । सम्पर्क सूत्र डा. जयप्रकाश गुप्ता 303, न्यू अभिषेक अपार्टमेंन्ट, जैन मन्दिर के पास, केशव नगर, सुभाष ब्रिज, अहमदाबाद, (गुज.) मो. 9426502235

29 वर्षीया कद 5 फीट 4'' शिक्षा एम.ए., राजकीय सेवा में रत गोत्र- रावत, केदावत सम्पर्क सूत्र श्री बाबू लाल रावत, 1989 गोविन्दरावजी का रास्ता जयपुर फोन- 2322272

24 वर्षीया शिक्षा सी.ए. कद 5 फीट। गोत्र ठाकुरिया, रावत सम्पर्क सूत्र श्री घनश्याम दास ठाकुरिया म.नं. 192 स्कीम नं. 8 गांधी नगर अलवर (राज.) फोन- 0144-2330642 मो. 9414016307

24 वर्षीया कद 5 फीट शिक्षा बी.डी.एस. (डेंटल सर्जरी) गोत्र रावत, बैद सम्पर्क सूत्र श्री वासुदेव ईश्वरलाल रावत सर्राफ सर्किट हाऊस रोड, संतोष नगर परतवाड़ा, जिला अमरावती (महा.) फोन- 07223-2223। निवास एवं मो. 9822231322

24 वर्षीया कद 5 फीट 2'' शिक्षा एम.ए. गोत्र नाटाणी खूंटेटा सम्पर्क सूत्र श्री किशोर नाटाणी द्वारा किशोर किराना, गांधी चौक चौक पूसला अमरावती महा. मो. 9422155346

पुर्नः विवाह के लिये

34 वर्षीय तलाकशुदा बहिन जिसके एक 12 वर्ष की पुत्री है। बी.ए. प्रथम वर्ष तक शिक्षित है। कद 5 फीट है जो भी बन्धु पुर्नविवाह का इच्छुक हो सम्पर्क करे। गोत्र ताम्बी, कूलवाल, श्री जयनारायण खंडेलवाल मु.पो. भौंरा जिला बैतूल म.प्र.।

एक तलाशुदा युवती उम्र 31 वर्ष बी.ए. लम्बाई 5 फीट बदन इकहरा, गेहुआं रंग, इच्छुक युवक सम्पर्क करें। पूर्व के दो बच्चे एक बच्चा उम्र 4 साल पुत्री उम्र 11 वर्ष है। युवती के साथ ही रहेंगे। सम्पर्क सूत्र सीताराम बटवाडा प्लाट नं. 362 बरकत नगर, गली नं. 10 टोंक फाटक जयपुर फोन 2591417

◀◀ पृष्ठ 22 का शेष
रह गये उनके अरमानों पर तुषारापात हो गया।

चयनकर्ता समिति को एक क्राईट एरिया बनाना चाहिए, जिसके अनुसार जिन स्थानों से उम्मीदवारों को चयन कराना था वहां के स्थानीय लोगों की राय, वहाँ की क्षेत्रीय समिति के माध्यम से अथवा अन्य प्रकार से संस्था एवं समाज की गतिविधियों में रचनात्मक कार्य करने वाले तथा महासभा के होने वाले कार्यक्रमों में अपना पूर्ण सहयोग तथा समय देने में सक्षम व समर्थ प्रत्याशियों में से ही चयन किया जाता। इस प्रक्रिया से किया गया चयन निष्पक्ष व सर्वमान्य होता। सभी योग्य व सेवाभावी सदस्यों को महासभा से जुड़ने का अवसर मिलता तथा चयनकर्ता किसी भी प्रकार के दबाव से मुक्त रहते।

अक्सर यह होता है कि चयनकर्ताओं पर इतना बाहरी दबाव बन जाता है कि वह अपनी अन्र्तमन की आवाज को भी नहीं सुन सकते है, तुरत फुरत निर्णय लेने की स्थिति में कुछ भिन्न निर्णय लेने के लिये बाध्य हो जाते हैं। ऐसा लिया गया निर्णय भविष्य में गलत परम्पराओं को जन्म देता है।

यह जनचर्चा थी कि महासभा के पद प्राप्ति के अभिलाषी को एक बड़ी राशि डोनेशन के रूप में देना होता है। वास्तव में यह मांग महासभा की आय बढाने के लिये सभी-प्रत्याशियों से की गई है, तब तो यह एक अच्छा प्रयास कहा जावेगा। कहीं ऐसा तो नहीं की कुछ एक चंद अभिलाषियों के साथ ही यह शर्त रखी गई हो। प्रत्याशी द्वारा इतनी बड़ी राशि देने में असमर्थता जाहिर करने पर उसे पद प्राप्ति से वंचित कर दिया गया हो- क्या यह सच है? अगर ऐसा हुआ है तो भविष्य में सावधान रहना होगा कि कहीं यह एक परम्परा बनकर पदाधिकारियों के पद पर चुनकर आने वालों की बजाय दान देकर आने वालों का बोलबाला नहीं हो जाय।

जो समाज के भामाशाह है, दानदाता है, समाज को दान देना ही अपना धर्म समझते हैं, वह तो निरन्तर महासभा को दान देते रहे है एवं देते रहेंगे। समाज सेवा ही प्रभु की सेवा है, ऐसा इन लोगों का अटल विश्वास रहा है। इस सच्चाई से दानदाता कभी भी अपना मुँह नहीं मोड़ेंगे।

समाज के सुदामा एवं सरस्वती पुत्रों को भी समाज सेवा के अवसर दिये जाय। इनका मार्गदर्शन, अनुभव व इनकी सेवायें भी समाज के लिये उतनी ही अनिवार्य है जितनी दानदाताओं द्वारा दिया गया दान।

किसी भी हालात में चुनावों को टाला नहीं जाना चाहिये, चुनाव के द्वारा ही कार्यकारिणी के सदस्यों व पदाधिकारियों का चयन होना चाहिये, भविष्य में परम्परा को बनाये रखना चाहिये।

विठ्ठलदास बाजरगान, कार्यकारिणी सदस्य
नल खेडा, शाजापुर म.प्र.

मंगलमय मधुर मिलन

कोटा-मांगरोल

चि. अशोक कुमार आत्मज श्री ब्रदी लाल ओढ-सदस्य महासभा कार्यकारिणी कोटा काशुभ विवाह सौ.का. निधि आत्मजा श्री हेमराज पीतलिया-मांगरोल के साथ दिनांक 21 मई, 2005 को सानन्द सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर वर पक्ष से 500/- रूपये तथा कन्या पक्ष से 251/- रूपये महासभा को सहयोगार्थ प्राप्त हुये। वर वधु चिरायु हो। प्रेषक- नाथू लाल खंडेलवाल रावत कोटा, का.का. सदस्य खंडेलवाल महासभा।

बुढ़ादीत-कोटा

चि. भगवान (अनिल), आत्मज श्री नन्दकिशोर जी मेहता बुढादीत का शुभ विवाह सौ.का. टीना (रानू) के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर वर पक्ष से 500/- रूपये तथा कन्या पक्ष से 251/- रूपये महासभा को सहयोगार्थ प्राप्त हुये। वर वधु चिरायु हो। प्रेषक- नाथू लाल खंडेलवाल रावत कोटा, का.का. सदस्य खंडेलवाल महासभा।

अखिल भारतवर्षीय खण्डेलवाल वैश्य

वर-वधू चयन समारोह-2005

आयोजन स्थल ▶ एक्जीक्यूटिव क्लब, बरेली

शनिवार

5 नवम्बर, 2005

आयोजन दिवस

रविवार

6 नवम्बर, 2005

निवेदन

देश के सभी खण्डेलवाल संगठन/संस्थाओं के अधिकारीगण, समाजसेवी कार्यकर्ताओं एवं स्वजातीय बन्धुओं से अनुरोध है कि आप इस आयोजन में अवश्य पधारें और अपने बहुमूल्य सुझावों से समाज को लाभान्वित करें। समाज की सेवा में संलग्न संस्थाओं एवं पदाधिकारियों से अनुरोध है कि वह अपने शहर एवं क्षेत्र में संलग्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवम् स्वजातीय बन्धुओं से पत्राचार हेतु उनके पते की सूची एवं विवरण हमें भिजवाने का कष्ट करें। संस्था द्वारा प्रकाशित टेलीफोन डायरेक्टरी या स्मारिका का प्रकाशन किया गया हो तो हमें भेजने का कष्ट करें।

आयोजक

श्री खण्डेलवाल वैश्य सभा-बरेली

कैम्प-कार्यालय :- मै. बी.एल. एग्रो ऑयल्स प्रा.लि. माधोबाड़ी, बरेली

फेक्स/फोन 0581-2546640 मो. 98976-27301

अध्यक्ष
घनश्याम खंडेलवाल
9837027302

संरक्षकगण
श्री राजेन्द्रप्रसाद खंडेलवाल
श्री गंगासहाय मोदी
श्री कैलाश नाथ खंडेलवाल
श्री प्रहलाद राय खंडेलवाल

महामंत्री
राजीव खंडेलवाल
9359102425

प्राप्ति स्वीकार

महासभा के प्रचारक देश के हर भाग में पहुँचते है और आपसे सम्पर्क कर महासभा के कार्यक्रमों व गतिविधियों की जानकारी देते है तथा संस्था के कार्यक्रमों की पूर्ति हेतु धन संग्रह करते है। आप प्रचारक को पूरा पूरा सहयोग देकर धन संग्रह कराते है तथा धनराशि देते है। इसके लिये हम आप सभी दानदाताओं का हृदय से आभार व्यक्त करते है कि आपके सहयोग से ही संस्था के कार्यक्रमों की पूर्ति होती है। आपकी संस्था के प्रति आत्मीयता सराहनीय है और अपेक्षा है कि यह निरन्तर बनी रहे। हम हर महिने पत्रिका में दानदाताओं की सूची का प्रकाशन करते हैं। यदि सूची प्रकाशन में कहीं कोई भूला रहे तो आप कृपया कार्यालय को अवगत करावें।

रामरतन घीया- संयुक्त मंत्री

गतांक से आगे सीताराम खूंटेटा प्रचारक द्वारा
दिनांक 1-4-04 से 31-7-04

151) श्रीजगदीश प्रसाद गुप्ता कोयला
101) "गिर्राजप्रसाद खंडेलवाल "
151) "जगमोहन गुप्ता मियाडा
151) "जगदीशप्रसाद खंडेलवाल "
101) "खेमराज गुप्ता कोयला
101) "मदनमोहन रावत मांगरोल
101) "ओमप्रकाश सौंखिया बारां
151) "मदनमोहन गुप्ता "
151) "कन्हैयालाल मेहता "
301) "प्रमोदकुमार खंडेलवाल "
101) "प्रेमचन्द बीमवाल "
201) "बालमुकुन्द सिरोहिया "
301) "सतीशकुमार रावत "
285) "घासी लाल रावत "
201) "चिरंजीलाल रावत "
62) "लीलाधर रावत बारां
1100) "सुनीलकुमार खंडेलवाल "
201) "मोहनलाल धामानी सीसवाली
51) "मूलचन्द महरवाल "
101) "प्रहलाद नैनीवाल "
251) "गिर्राजप्रसाद महरवाल "
151) "केदारलाल नैनीवाल "
201) "गिर्राजप्रसाद धामानी "
201) "कृष्णमुरारी नैनीवाल "
201) "ओमप्रकाश आकड "
101) "सुरेन्द्र खंडेलवाल "
142) "बद्रीलाल महरवाल "
151) "पुरुषोत्तम धामानी "

251) श्रीमुरलीधर नैनीवाल "
101) "श्रीनाथ ओमप्रकाश "
241) "शिवप्रसाद विष्णुप्रसाद "
201) "रामेश्वरप्रसाद सौंखिया "
200) "गोपालकृष्ण झालानी "
151) "घनश्याम जसोरिया रायथल
1101) "कन्हैया लाल माणकबोहरा "
101) "श्रीनाथ रामेश्वरप्रसाद "
51) "राजेन्द्रप्रसाद कूलवाल अन्ता
121) "गिर्राजप्रसाद टोडवाल अन्ता
101) "परमानन्द बूसर "
101) "केदारनाथ मेठी "
300) "डा. किशनकुमार खंडेलवाल "
101) "प्रभुलाल कूठ "
51) "रामस्वरूप किलकिल्या "
101) "सतीशचन्द्र सेठी "
100) "बजरंग लाल रावत "
51) "राजेन्द्रप्रसाद खारवाल "
101) "केशरीलाल महावीर प्रसाद बडगांव
150) "लक्ष्मीचन्द टोडवाल "
251) "मूलचन्द ओमप्रकाश "
101) "खंडेलवाल वैश्य पंचायत "
142) "बृजमोहन सौंखिया उदपुरिया
201) "भंवरलाल पितलिया पीपलदाकलां
201) "रामस्वरूप पीतलिया "
52) "सत्यनारायण पीतलिया "
301) "मांगीलाल कट्टा गैंता
52) "बाबूलाल पीतलिया इटावा

151) श्री हेमराज पीतलिया मांगरोल
151) "मोहनलाल केदावतबम्बूलियाकलां
101) "रामनिवास केदावत "
51) "प्रेमचन्द डंगायच "
101) "बाबूलाल डंगायच बटावदी
101) "कल्याणसहाय ठाकुरिया बटावदा
301) "उत्तमचन्द ताम्बी मोरपा
72) "बंशीलाल राधेश्याम "
101) "नन्दकिशोर हरीशकुमार "
101) "बंशीलाल ओमप्रकाश "
101) "रामबाबू मनीषकुमार "
300) "बाबूलाल नाटानी गैंता
201) "पूनमचन्द शाहरा "
101) "कन्हैयालाल माणकबोहरा मोरपा
151) "पुरूषोत्तम नवनीतकुमार "
62) "रामरतन जगदीशप्रसाद "
101) "बृजमोहन ओमप्रकाश "
201) "सूरजमल ताम्बी "
301) "धन्नालाल ताम्बी सुल्तानपुर
71) "बंशीधर शिवकुमार "
251) "केदारलाल सौखिया "
301) "गिर्राजप्रसाद सौंखिया "
171) "बालमुकुन्द डंगायच "
172) "श्रीनाथ रामकिशन "
62) "प्रेमचन्द डंगायच "
71) "चतुर्भुज नैनीवाल "
62) "रामेश्वर नाटानी "
221) "मुरलीधरराधेश्याम सुल्तानपुर

101) श्रीखंडेलवाल वैश्यपंचायतसुल्तानपुर
101) ''महेन्द्रकुमार धामानी ''
172) ''रमेशचन्द्र राजेन्द्रकुमार ''
101) ''सुधीरकुमार विनोदकुमार ''
101) ''मास्टर कल्याणचन्द गिर्राजप्रसाद
61) ''पुरूषोत्तम बूसर ''
101) ''मदनमोहन कूठ ''
101) ''मधुसूदन श्यामबिहारी ''
101) ''महेन्द्रकुमार नाटानी ''
101) ''मुकुटबिहारी अशोककुमार ''
62) ''हरीश खंडेलवाल ''
101) ''जुगलकिशोर रावत ''
251) ''महेन्द्रकुमार सौंखिया ''
101) ''मोहनलाल झालानी बुढादीत
101) ''कन्हैयालाल बूसर ''
101) ''राजेन्द्रकुमार झालानी ''
101) ''मूलचन्द मेहता ''
101) ''ओमप्रकाश चेतनकुमार ''
101) ''राजेन्द्रमोहन अनिलकुमार ''
51) ''परमानन्द बूसर ''
101) ''महेन्द्र कुमार झालानी ''
101) ''रामकल्याण श्यामसुन्दर ''
101) ''नन्दकिशोरमेहता . बुढादीन
101) ''गिर्राजप्रसाद अंकितकुमार टांकरवाडा
101) ''श्रीकृष्ण सुरेशकुमार ''
101) ''बनवारीलाल नाटानी ''
101) ''प्रभुलाल पीतलिया ''
101) ''दीपककुमार खारवाल सुल्तानपुर
101) ''केदारमल कूठ ''
51) ''बृजमोहन टोडवाल कोटा
100) ''रामप्यारी देवी.खंडेलवाल ''
51) ''जगदीशकुमार खंडेलवाल ''
51) ''रामगोपाल आमेरिया ''
101) ''राधाकृष्ण खूंटेटा ''
151) ''हमीरमल बूसर ''
200) ''गिर्राजप्रसाद महरवाल ''
200) ''शिवप्रसाद महरवाल ''
201) ''हरिराम बीमवाल ''

251) श्रीसंतोष कूठ सुल्तानपुर
150) ''बृजमोहन कायथवाल कोटा
101) ''बंशीलाल मेठी ''
151) ''सुधीर खंडेलवाल ''
51) ''द्वारकालाल बूसर ''
200) ''भगवती प्रसाद खंडेलवाल ''
200) ''राजेन्द्रप्रसाद खंडेलवाल ''
251) ''डा.जी.पी.खंडेलवाल कोटा
151) ''रविनारायण गुप्ता ''
101) ''वत्सराज निरंजनकुमार ''
101) ''दीनदयाल सेठी ''
151) ''माणकचन्द नाटानी ''
121) ''बंशीधर नाटाणी ''
251) ''आर.एल. खंडेलवाल ''
251) ''दीनदयाल कायथवाल ''
51) ''राजेन्द्रकुमार सेठी ''
251) ''जगदीश चन्द मेहता ''
101) ''कृष्णगोपाल घीया ''
151) ''प्रेमचन्द बूसर ''
51) ''बाबूलाल गुप्ता ''
200) ''डा.एन.के.गुप्ता ''
251) ''रामबाबू सांभरिया ''
251) ''भारत ट्रेडिंग कम्पनी ''
101) ''डा.प्रेमचन्द खंडेलवाल ''
500) ''रमेशचन्द्र गुप्ता ''
101) ''चन्द्रप्रकाश खंडेलवाल ''
101) ''जगदीशप्रसाद खंडेलवाल ''
151) ''डा. दिनेशकुमार खंडेलवाल ''
101) ''रमेशचन्द्र खूंटेटा ''
100) ''केदारमल बूसर ''
51) ''रामेश्वरदयाल खंडेलवाल कोटा
101) ''गिर्राजप्रसाद गुप्ता ''
101) ''लक्ष्मीचन्द खंडेलवाल ''
250) ''बंशीधर सौंखिया ''
101) ''घनश्याम धामानी ''
500) ''इन्द्रभूषण धामानी ''
101) ''मोहनलाल कायथवाल ''
51) ''सत्यनारायण पाबूवाल ''
101) ''मूलचन्द केदावत ''

150) श्रीपन्नालाल टोडवाल कोटा
101) ''रमेशचन्द्र खंडेलवाल ''
1000) ''रामप्रसाद खंडेलवाल ''
600) ''ओमप्रकाश गुप्ता ''
541) ''गिर्राजप्रसाद खंडेलवाल ''
241) ''रामेश्वर दयाल खूंटेटा ''
101) ''आर.एस.खंडेलवाल ''
251) ''कुंजबिहारी खंडेलवाल ''
101) ''गिर्राजप्रसाद खूंटेटा ''
51) ''केदारलाल गुप्ता ''
101) ''गणेशलाल लक्ष्मीनारायण ''
50) ''लक्ष्मीचन्द टटार ''
201) ''गिर्राजप्रसाद नाटानी ''
51) ''मोहनलाल बडाया ''
101) ''बाबूलाल बढेरा ''
151) ''मुकुटबिहारी नाटानी निमोदा
52) ''घनश्याम नरेन्द्रकुमार ''
151) ''कन्हैयालाल सत्यनारायण ''
102) ''कृष्णअवतार बूसर ''
101) ''प्रहलाद खंडेलवाल दीगोद
101) ''जमना लाल राजेन्द्रप्रसाद ''
101) ''रामेश्वर खंडेलवाल ''
201) ''प्रेमचन्द घीया ''
101) ''अमित किराना स्टोर्स कापरेन
151) ''ओमप्रकाश सेठी ''
151) ''महावीरप्रसाद माणकबोहरा ''
151) ''सीताराम शम्भूदयाल ''
101) ''मूलचन्द आमेरिया पापडी
151) ''रामावतार ताम्बी बडाखेडा
101) ''कृपाशंकर रमेशचन्द ''
101) ''सत्यनारायण परमानन्द ''
50) ''रामनारायण कट्टा ''
150) ''वत्सराज कट्टा ''
151) ''निदेशकुमार राजेशकुमार ''
210) ''बाबूलाल आकड केशवरायपाटन
101) ''दीनदयाल टोडवाल कोटा
51) ''विजयनारायण कट्टा ''
71) ''राधेश्याम मोहनलाल नांगललाट
140) ''कल्याणसहायकस्तूरचन्द ''

101) श्रीराजेशकुमार सतीशचन्द्रनागललाट
72) ''दिनेशचन्द्र सुनीलकुमार जयपुर
101) ''मदनलाल कैलाशचन्द्र नांगललाट
72) ''मोहनलाल हेमराज ''
101) ''प्रकाशचन्द्र रामगोपाल ''
101) ''रामेश्वरप्रसाद संतोषकुमार मण्डेरू
101) ''बालगोविन्दसुरेशचन्द ''
101) ''भगवानसहाय गोविन्दसहाय ''
101) ''ओमप्रकाश मुकेशकुमार ''
50) ''मनोहरलाल रावत टोडाभीम
62) ''कल्याणप्रसाद हरिबाबू ''
61) ''विशम्भरदयाल हरीप्रसाद ''
101) ''हरसहाय सुरेशचन्द ''
61) ''केदारप्रसाद ओमप्रकाश ''
61) ''रामनिवास खंडेलवाल ''
62) ''राधेश्याम रावत ''
151) ''रामचरण सांभरिया गंगापुरसिटी
151) ''घनश्याम माणकबोहरा ''
251) ''प्रहलादचन्द मेठी ''
151) ''भौंरीलाल कायथवाल ''
151) ''रामजीलाल ठाकुरिया ''
251) ''रमेशचन्द्र पीतलिया ''
101) ''झूंथालाल जौहरीलाल ''
101) ''बजरंगलाल रावत ''
151) ''मूलचन्द दुसाद ''
151) ''प्रवीनकुमार विनीतकुमार ''
101) ''रामजीलाल मुकेशकुमार ''
151) ''गोपालप्रसाद मुकेशकुमार ''
201) ''पुरूषोत्तम डंगायच ''
1800) ''सीताराम गुप्ता ''
151) ''डा. रामलीलाल महरवाल ''
251) ''कैलाशचन्द्र खूंटेटा ''
152) ''सीताराम माठा ''
151) ''दामोदरलाल सुधीरकुमार ''
151) ''कल्याणबक्श मुरारीलाल ''
101) ''कपूरचन्द हल्दिया ''
101) ''घनश्यामदास अनन्तलाल ''
92) ''श्रीमतीकवितादेवी खूंटेटा ''
101)श्रीगोविन्दनारायण रमेशचन्द ''

151) श्रीसुखदेव शंकरलाल गंगापुरसिटी
101) ''राधेश्याम बडाया ''
101) ''मदनलाल कमलेशकुमार ''
101) ''हनुमानप्रसाद भांगला ''
201) ''शम्भूदयाल टोडवाल गंगापुर
101) ''दीनदयाल डंगायच ''
101) ''वेदप्रकाश डंगायच ''
101) ''कन्हैयालाल बडगोती ''
101) ''भगवानसहाय भूखमारिया ''
101) ''रामसहाय शम्भूदयाल बामनवास
101) ''हरिशकुमार डंगायच ''
101) ''राधेश्याम गुप्ता ''
52) ''केदारप्रसाद ताम्बी ''
52) ''शम्भूदयाल ताम्बी ''
51) ''वैद्य सत्यनारायण डंगायच ''
62) ''रामजीलाल बाबूलाल पिपलाई
72) ''घनश्यामदास राजेशकुमार ''
62) ''जगदीशप्रसाद महरवाल ''
62) ''गंगासहाय रामचरण ''
101) ''रामस्वरूप राधेश्याम खेडली
51) श्रीमतीविमलादेवी अटोलिया ''
51)श्रीराधेश्याम डंगायच ''
51) ''हरिनारायण दुसाद डिग्गी ''
251) ''रामबाबू खंडेलवाल मालपुरा
251) ''रामप्रसाद कैलाशचन्द्र ''
151) ''रामप्रसाद गुप्ता ''
101) ''रामस्वरूप बडाया ''
101) ''मोहनलाल खंडेलवाल ''
151) ''मूलचन्द जगदीशप्रसाद मालपुरा
101) ''नवलकिशोर खूंटेटा ''
151) ''किशनलाल गुप्ता ''
151) ''ओमप्रकाश गुप्ता ''
101) ''फतेहलाल राजोरिया ''
151) ''गोविन्दनारायण आलोककुमार लाम्बाहरिसिंह
101) ''मूलचन्द गणेशनारायण ''
251) ''गोपाललाल झालानी ''
101) ''हरिरामदीपककुमार ''
151) ''मोहनलाल कमलकुमार पचेवर

100) ''मुरलीधर मोहनलाल पचेवर
62) ''सूरजमल मुकेशकुमार ''
151) ''नाथूलाल ओमप्रकाश ''
62) ''केशरलाल कस्तूरचन्द टोडारायसिंह
101) ''हीरालाल गोविन्दनारायण ''
151) ''गोकुलचन्द बसन्तीलाल ''
62) ''सुदर्शन खंडेलवाल ''
112) ''सत्यनारायण कैलाशचन्द ''
101) ''डा. जे.पी.गुप्ता ''
100) ''भगवानदास रमेशचन्द्र ''
101) ''सूरजमल बसन्तकुमार ''
201) ''बजरंगलाल ओमप्रकाश ''
101) ''अमोलकचन्द सत्यनारायण ''
72) ''केवलचन्द रमेशचन्द ''
112) ''सत्यनारायण सीताराम ''
201) ''बजरंगलाल दामोदरलाल ''
92) ''रामेश्वरप्रसाद सुरेशकुमार ''
61) ''भंवरलाल राजेशकुमार ''
101) ''डा.मदनलाल खंडेलवाल ''
101) ''गुलाबचन्द खंडेलवाल ''
92) ''रामपाल गुप्ता ''
51) ''चिरंजीलाल पुरूपोत्तम ''
100) ''राधेश्याम गुप्ता ''
62) ''दामोदर प्रसाद गुप्ता ''
101) ''गजानन्द हरिनारायण भासू
72) ''रामनिवास पाटोदिया ''
72) ''लादूराम रामनारायण ''
101) ''मदनलाल राधेश्याम ''
61) ''वृन्दावनगोविन्दनारायणटोडारायसिंह
72) ''जगदीशलाल गुप्ता ''
201) ''कान्ताप्रसाद गुप्ता देवली
122) ''कैलाशनारायण पंकजकुमार ''
201) ''श्यामलाल हरिमोहन ''
102) ''लोकेशओमप्रकाश ''
200) ''सत्यनारायण नाटानी देवली
151) ''स्वतंत्रकुमार रावत ''
150) ''सत्यनारायण गुप्ता ''
151) ''चौथमल विनोदकुमार ''

151) श्रीमंगलकुमार भुवनेशकुमार पनवाड
151) ''राधेश्यामश्यामसुन्दर देवली
201) ''रामप्रसाद सुरेशचन्द्र ''
101) ''हनुमानप्रसाद केदारप्रसाद बमोर
251) ''जगदीशप्रसादरामेश्वरप्रसाद ''
101) ''बद्रीप्रसाद बाजरगान बोरडी
101) ''प्रेमचन्द ताम्बी रूपरा
121) ''राजेन्द्रप्रसाद सत्यप्रकाश सुरेली
121) ''नरेन्द्रकमार गुप्ता ''
121) ''राधेश्याम बटवाडा ''
121) ''बंशीधर निरंजनकुमार ''
121) ''जगदीशप्रसाद मेहता ''
151) ''मोहनलाल राजेशकुमार ''
151) ''मांगीलाल रामावतार रामपुरा
151) ''विमलकुमार रामबाबू ''
101) ''ओमप्रकाश पवनकुमार ''
151) ''रामकरन कैलाशचन्द्र ''
201) ''रामेश्वरलाल भगवानदास टोंक
71) ''कालूराम कैलाशचन्द्र टोंक
101) ''शंकरलाल महेशकुमार ''
100) ''मोहनलाल देवेन्द्रकुमार ''
151) ''विमलकुमार कमलेशकुमार ''
101) ''निर्मलकुमार देवेन्द्रकुमार ''
72) ''जगदीशप्रसाद सुनीलकुमार ''
151) ''सत्यनारायण अनिलकुमार ''
151) ''महेन्द्रकुमार लोकित कुमार ''
151) ''रामावतार मोहनलाल ''
151) ''मदनमोहन गुप्ता ''
151) ''रमेशचन्द्र दुसाद ''
101) ''केदारमल सुरेन्द्रकुमार ''
100) ''रामस्वरूप सत्यनारायण बमोर
1800) ''प्रेमचन्द गुप्ता टोडारायसिंह
200) ''प्रेमचन्द्रगुप्ता जयपुर
72) ''रामावतार अटोलिया टोंक
151) ''रामेश्वरप्रसाद दुसाद ''
101) ''वृन्दावन सेठी ''
101) ''संजयकुमार गोवर्धनदास ''
51) '' उच्छबदास हरिदास ''
122) ''रतनलाल सुरेन्द्रकुमार ''

102) श्रीगंगादास बालकिशन टोंक
201) ''मथुरादास वृन्दावनदास ''
151) ''श्रीकृष्णदास सेठी टोंक
101) ''नागरदास रमणीकदास ''
101) ''बृजमोहनअंकितकुमार चन्दलाई
151) ''कजोडमल अशोकुमार ''
151) ''सत्यनारायण बद्रीप्रसाद घास
101) ''ओमप्रकाश ताम्बी ककोड
101) ''राधेश्याम गुप्ता ''
62) ''घनश्यामदास मदनलाल गोठडा
101) ''रामचन्द्र रूपनारायण उनियारा
72) ''मदनमोहन लक्ष्मीकान्त ''
102) ''रामस्वरूप चन्द्रमोहन ''
71) ''मोहनलाल बडाया ''
151) ''रामगोपाल गंगाधर ''
101) ''राधेश्याम बडाया ''
51) ''मोहनलाल रावत ''
101) ''राधेश्याम रावत ''
501) ''श्यामसुन्दर रमेशचन्द्र ''
101) ''प्रहलादनारायण बडवाडा टोंक
151) ''मुरलीधर मुकुटबिहारी ''
101) ''धर्मराज गुप्ता ''
101) ''भगवानदास गुप्ता ''
101) ''रमेशचन्द्र खंडेलवाल ''
101) ''रामावतार टोडवाल ''
51) ''प्रहलाद दास टोडवाल ''
251) ''गोवर्धनदास सेठी ''
151) ''दिनेशकुमार मोहितकुमार ''
151) ''गोविन्दनारायण बाबूलाल घास
151) ''सत्यनारायण सुरेशचन्द्र ऊँम
151) ''नाथूलाल बाबूलाल ''
151) ''राधेश्याम सत्यनाराण निवाई
151) ''श्रीनाथ ट्रेडिंग कम्पनी ''
101) ''खंडेलवाल एंड कम्पनी ''
121) ''हनुमानदास राजेन्द्रप्रसाद ''
101) ''जगदीशप्रसाद टोडवाल ''
71) ''रामगोपाल राधामोहन ''
151) ''तमोलिया एंड कम्पनी ''
72) ''राधेश्याम राजेशकुमार ''
201) श्रीरामस्वरूप टोडवाल निवाई

192) ''बद्रीनारायण कैलाशचन्द्र निवाई
101) ''गजानन्द तमोलिया ''
101) ''रामसहाय गोवर्धनलाल ''
101) ''राधाकिशन खंडेलवाल ''
101) ''मोतीलाल सत्यनारायण ''
251) ''मदनलाल कैलाशचन्द्र पीपलू
101) ''ताराचन्द कुंजीलाल निवाई
101) ''बाबूलाल महेशचन्द्र निवाई
101) ''हनुमानसहाय बडाया ''
251) ''भंवरलाल टोडवाल डांगरथल
101) ''बजरंगलाल अवधेशकुमार निवाई
141) ''रामेश्वरप्रसाद हरीशचन्द्र ''
51) ''देवनारायण टोडवाल डांगरथल
201) ''लल्लूलाल दीपककुमार निवाई
316) ''रामबाबू खंडेलवाल ''
101) ''कन्हैयालाल खारवाल ''
51) ''रामप्रसाद ओढ ''
51) ''राधेश्याम ओढ ''
51) ''राधेश्याम टोडवाल ''
101) ''कान्तीचन्द्र नाटाणी एड ''
51) ''मदनमोहन नाटानी ''
192) ''गोपाल लाल गुप्ता जामडोली
151) ''गोपीलाल नन्दकिशोर ''
151) ''रामविलास नवलकिशोर ''
151) ''नृसिंहलाल बृजमोहन मलारना
151) ''रामेश्वर प्रसाद सत्यनारायण ''
101) ''राधावल्लभ अशोककमुार सूरवाल
151) ''लक्ष्मीनारायण मेहता ''
151) ''दामोदरप्रसाद घीया भगवतगढ
101) ''ओमप्रकाश महेन्द्रकुमार ''
101) ''रमेशचन्द्र बद्रीप्रसाद ''
101) ''मोहनलाल कैलाशचन्द्र ''
101) ''रामसहाय धर्मप्रकाश ''
101) ''नरेन्द्रकुमार ओढ ''
72) ''ओमप्रकाश आनन्दस्वरूप ''
151) ''राधेश्याम चन्द्रप्रकाश ''
151) ''रामविलास रामगोपाल ''
101) ''वैद्य रामप्रसाद गुप्ता ''
51) श्रीप्रेमप्रकाश ओढ भागवतगढ
101) ''रूपनारायण रामबाबूजटवाडाकलां

101) श्रीरामजीलाल विनोदकुमार ''
101) ''कल्याणमल महेशकुमार ''
101) ''गजानन्द धनवन्ती प्रसाद ''
101) ''दामोदर प्रसाद पीतलिया ''
101) ''रामनारायण रामविलास ''
101) ''चिरंजीलाल कमलेशकुमार खिरनी
101) ''चिरंजीलाल श्यामबिहारी ''
101) ''सत्यनारायण संतोषकुमार ''
101) ''कमलकिशोर विनयकुमार ''
101) ''रामेश्वरप्रसाद महेन्द्रकुमार ''
72) ''सत्यनारायण राजेन्द्रप्रसाद ''
101) ''मोहनलाल भगवानसहाय ''
51) ''लक्ष्मीनारायण कट्टा ''
101) ''रूपनारायण महेन्द्रकुमार ''
101) ''ओमप्रकाश सूरजमल ''
101) ''रूपनारायण घीया डीडवाडी
101) ''लल्लूरामदिनेशकुमार खिरनी
101) ''रामावतार राजमल ''
101) ''जगदीशप्रसाद बाबूलाल ''
101) ''बद्रीनारायणसत्यनारायणडीडवाडी
101) ''घनश्यामदाससतीशकुमारबहनोली
101) ''प्रहलाद नारायणरामावतार ''
101) ''केदारप्रसाददिनेशकुमारपीपलवाडा
102) ''रूपनारायण राजेन्द्रप्रसाद ''
101) ''मोतीलाल रामेश्वरप्रसाद ''
101) ''जगदीशप्रसाद नरेन्द्रकुमार ''
51) ''सत्यप्रकाश राजेशकुमार ''
51) ''विजयनारायण कमलेशकुमार ''
101) ''विजयनारायण प्रकाशचन्द्र ''
151) ''रामस्वरूप रमेशचन्द्र ''
101) ''लल्लूलाल दिलीपकुमार ''
51) ''कजोडमल ओमप्रकाश ''
51) ''विनोदकुमार राधेश्याम ''
101) ''राधेश्याम अशोककुमार ''
101) ''केदारमल सुरेशचन्द्र ''
101) ''सत्येन्द्रकुमार कमलेशकुमार ''
201) श्रीगुलाबचन्द्रबाबूलाल सारसोप
201) ''प्रेमचन्द राजेशकुमार ''
101) ''रामेश्वरप्रसाद तेजकरण शिवाड
92) ''रामविलास रामगोपाल ''

101) श्रीराधेश्याम द्वारकाप्रसाद शिवाड
92) ''विजयनारायण उमाशंकर ''
101) ''घनश्यामदास आशीषकुमार ''
101) ''रमेशचन्द मनोजकुमार ''
71) ''रामकिशन रामगोपाल ''
72) ''बृजमोहन मुकेशकुमार ''
101) ''जगदीशप्रसाद ठाकुरिया ''
72) ''हरीप्रासद हनुमान प्रसाद ''
101) ''मथुरालाल ओमप्रकाश ''
72) ''बृजमोहन राधेश्याम ''
51) ''प्रहलादनारायण डंगायच ''
51) ''चिरंजीलाल सुरेशकुमार ''
101) ''राधामुकुन्द गोविन्दप्रसाद ''
51) ''नन्दकिशोर राजेशकुमार ''
102) ''सूरजमल पाटोदिया ''
151) ''हरिशंकर कांठ हिन्दुपुरा
201) ''रामजीलाल दामोदरप्रसाद ''
151) ''ज्ञानचन्द किलकिल्या ''
101) ''रामकल्याणगोवर्धनलल जटावती
101) ''रामेश्वरप्रसाद गिर्राजप्रसाद ''
101) ''प्रेमप्रकाशनरेन्द्रकुमार ''
50) ''सत्यनारायण बूसर जटावती
51) ''नारायणलाल सियाराम सूरवाल
101) ''दिनेशचन्द्र धामानी सवाईमाधोपुर
101) ''नाथूलाल गुप्ता ''
150) ''जगदीशप्रसाद काठ ''
192) ''रामपाल अशोककुमार ''
150) ''डा.बी.एल.गुप्ता ''
101) ''मोहनलाल बडाया ''
151) ''लक्ष्मीनारायण कैलाशचन्द्र ''
51) ''घनश्याम ओढ ''
101) ''घनश्याम खूंटेटा ''
72) ''रूपनारायण खंडेलवाल चौथ का बरवाडा
51) श्रीरामप्रसाद घीया चौथ का बरवाडा
101) ''बुद्धिप्रकाश खंडेलवाल ''
300) ''नवरतन खंडेलवाल सवाईमाधोपुर
100) ''डा.गोपाल खूंटेटा ''
51) ''रामसहाय मोहनलाल दत्तवास
51) ''जगदीशप्रसाद रमेशचन्द्र ''

101) श्रीप्रहलादकुमारआशीषकुमारदत्तवास
101) ''हरिनारायण रमेशचन्द्र ''
62) ''लल्लूप्रसाद कैलाशचन्द्र ''
72) ''गोपाललाल पटवारी ''
101) ''डा. एस.एन.गुप्ता ''
151) ''बृजमोहन हरिनारायण ''
201) ''नाथूलालगिर्राजप्रसाद मित्रपुरा
101) ''चन्द्रमोहन हरिनारायण ''
101) ''रामकरण सत्यनारायण ''
101) ''रामावतार जगदीशप्रसाद ''
62) ''सत्यनारायण बाबूलाल ''
121) ''मोहनलाल काठ दत्तवास
92) ''राधेश्याम नरेन्द्रकुमार लिवाली
51) ''घनश्याम पियूषकुमार ''
62) ''केशरीलाल कैलाशचन्द्र ''
72) ''बाबूलाल प्रेमप्रकाश ''
101) ''किस्तूरचन्द ओमप्रकाश रिवाली
111) ''ओमप्रकाश अजयकुमार ''
72) ''मदनलाल बाबूलाल ''
151) ''कैलाशचन्द्र केदारप्रसाद ''
151) ''कैलाशचन्द्र हनुमानप्रसाद सुकार
161) ''भगवानसहाय दामोदरप्रसाद ''
102) ''बजरंगलाल गिर्राजप्रसाद ''
101) ''सत्यनारायण आशीषकुमार ''
101) ''जगदीशप्रसाद हरिओम ''
201) ''रामविलास राधेश्याम ''
62) ''रामकिशोर जगदीशनारायण ''
121) ''राधेश्याम मुकेशकुमार भावरा
162) ''रामसहाय कैलाशचन्द्र ''

भूल सुधार

महासभा पत्रिका दिसम्बर, 2004 अंक के पृष्ठ संख्या 29 पर श्री सीताराम खूंटेटा की प्राप्ति स्वीकार के अन्तर्गत वैध गंगाशरण दाउदयाल डीग की राशि जो 101 रूपये प्राप्त हुई भूल से 72 रूपये प्रकाशित हो गई है अतः इसे 101 रूपये पढ़ा जावे। भूल के लिये खेद है।

संयुक्त मंत्री

दिनांक 5 जुलाई, 2005 को महासभा कार्यालय में संरक्षक श्री जयनारायणजी मेठी के अभिनन्दन समारोह के अवसर पर अधिकारियों एवं स्थानीय कार्यकारिणी सदस्यों के स्वागत के विभिन्न दृश्य

डाक पंजीयन संख्या - JPC/3822/02/2003-05 जुलाई, 2005 R.N.I. No. 72410/99
Licence No SSP- RJ /JPC/WPP- 53/2003 (Licence to Post Without Prepayment)
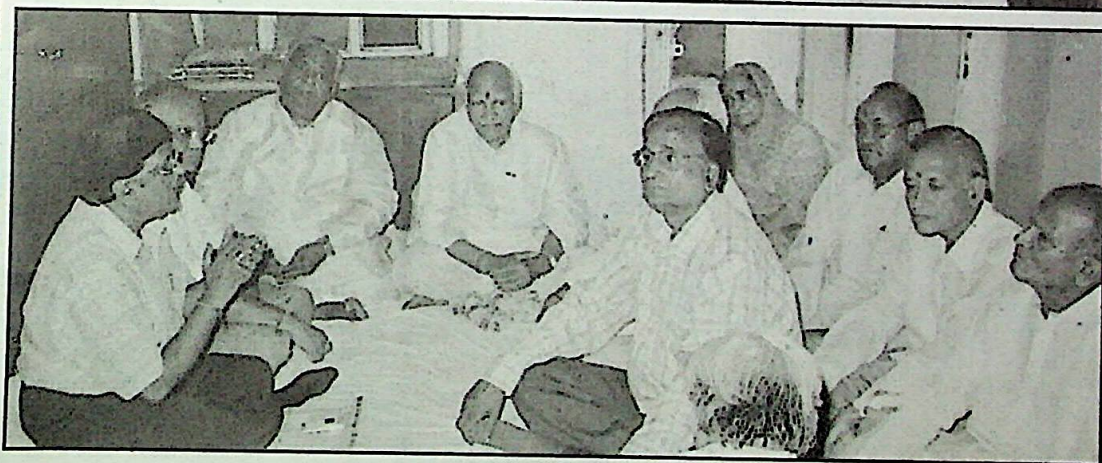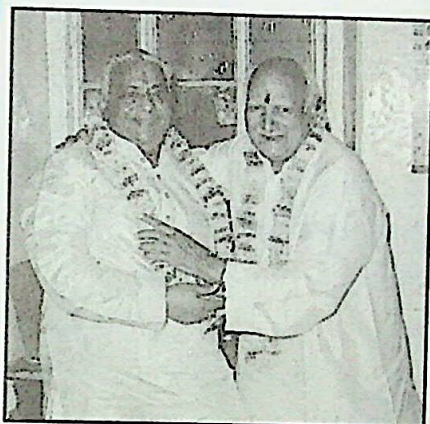
महासभा पत्रिका के ''अधिवेशनांक'' में

विज्ञापन दें व दिलावें

महासभा का 30 वां अधिवेशन उदयपुर में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ है। इसमें संस्था के नये पदाधिकारियों तथा का.का. के सदस्यों के चुनाव सम्पन्न हुये है। इन सभी का सचित्र संक्षिप्त विवरण, पूरा पता, टेलिफोन नम्बर आदि का प्रकाशन किया जावेगा। इस अधिवेशन की सम्पूर्ण जानकारी के लिये महासभा पत्रिका का एक विशेषांक ''अधिवेशनांक'' के रूप में शीघ्र प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें समाज उत्थान, महिला, बच्चों, धार्मिक विचारों आदि से संबंधित लेख, कहानियाँ आदि के अतिरिक्त समाज के महान सन्तों के रंगीन, संग्रहणीय चित्र विभिन्न संस्थाओं व प्राचीन धरोहर के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जायेगी। इस विशेषांक में जो भी बन्धु अपने प्रतिष्ठानों के विज्ञापन देने के इच्छुक हों, वे तुरन्त विज्ञापन सामग्री व विज्ञापन राशि भिजवाकर सहयोग करें-

विज्ञापन की दरें इस प्रकार है-

टाईटिल अन्तिम पृष्ठ	11000 रूपये
टाईटिल द्वितीय व तृतीय पृष्ठ	5000 रूपये
रंगीन पूरा पृष्ठ	3000 रूपये
अन्यत्र पूरा पृष्ठ	2000 रूपये
आधा पृष्ठ	1000 रूपये
2''6 पैनल	500 रूपये

आशा है स्वजातीय बन्धु विज्ञापन भिजवाकर सहयोग करेंगे।

डाक पंजीयन संख्या JPC/3822/02/2003-05

खंडेलवाल महासभा पत्रिका

गंगा मन्दिर स्टेशन रोड, जयपुर-302006

कृपया वितरण न होने पर उपरोक्त पते पर लौटाए

श्री ____________________

खण्डेलवाल वैश्य महासभा जयपुर (स्वामी) के लिए प्रधानमंत्री द्वारा प्रकाशित (प्रकाशक) फोन :2372430
प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर, फोन : 2294887, में मुद्रित (मुद्रक) गंगामंदिर, स्टेशन रोड, जयपुर से प्रकाशित